॥ हरि:ॐ ॥

श्रीमोटावाणी

१-२

પૂજ્ય શ્રીમોટા
હરિ:ૐ
હરિ:ૐ આશ્રમ-સુરત

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [१]

दीक्षादिन (वसंतपंचमी) उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन वाणी

सूरत, ता. ४-२-१९७३

: अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सूरत-३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
भ्रमणभाष : ९७२७७ ३३४००
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

© हरि:ॐ आश्रम, सूरत-३९५००५

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सूरत-३९५००५. वेबसाईट

❑ **मुख पृष्ठ :** मयूर जानी, मो. : ९४२८४०४४४३

❑ **अक्षरांकन : अर्थ कॉम्प्यूटर**
२०३, मौर्य कॉम्प्लेक्स, सी. यू. शाह कॉलेज के सामने,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८० ०१४
भ्रमणभाष : ९३२७०३६४१४

❑ **मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.**
सिटी मिल कंपाउन्ड, कांकरिया रोड,
अहमदाबाद-३८० ०२२ दूरभाष : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरिः ॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम संस्करण)

श्रीमोटा क्वचित् ही प्रवचन करते थे । उनकी पावन वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजन ने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी । ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने अक्षरशः सुनकर उसकी पाण्डुलिपि अथाह परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यतः स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था । वे सभी पुस्तकों का पुनः प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्ट ने संभाल लिया है ।

श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिन गुजरातीभाषियों को भी मिल सके उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है ।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है । इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी । आपश्री कहते थे के 'मेरे लेख में अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं । और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही रहने देना । इस आज्ञा को ध्यान में लेकर श्रीमोटा

की यह ध्वनिमुद्रित वाणी आपश्री जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है । इसमें कोई सुधार नहीं किया गया है ।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुनः प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरशः वाणी अनुसार है, यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी की हैसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है ।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य चतुरंगी मुखपृष्ठ सहित श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अपने प्रेमभाव से अत्यंत भक्तिपूर्वक से किया है । हम उनका खूब खूब आभार मानते हैं ।

समाज का विशाल वर्ग श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और श्रीमोटा का आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं ।

– ट्रस्टीमंडल
हरिः ॐ आश्रम, सूरत

''मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ''

– मोटा

॥ हरिः ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. श्रीसद्गुरु का ऋण चुकाने हेतु मौनमंदिर ७
२. **मोटा :** समाज (भगवान) के मुनीम ८
३. स्वास्थ्य के लिए स्नानागार बनाओ ९
४. आश्रम का संचालन बिलकुल मितव्ययिता से १०
५. आश्रम द्वारा दी गई दान की रकम की संभाल ११
६. ठक्करबापा की प्रस्तावना– **मोटा** की
कर्मठता का प्रमाणपत्र १३
७. असह्य रोगों में भी साहित्य का सर्जन १४
८. दीक्षा अर्थात् १७
९. समाज– भगवान का व्यक्त स्वरूप २२
१०. समाज का काम वही भगवान की सेवा—पूजा..... २४
११. श्रीमद् राजचंद्र का त्याग २५
१२. श्रीबालयोगी की शर्तें २७
१३. अशक्य का शक्य वही प्रभुकृपा २८
१४. आशीर्वाद, दर्शन, धोक देना यह सब छोड़ो ३०
१५. मन्नत नहीं– प्रभुस्मरण और प्रार्थना ३१
१६. **मोटा** के पुस्तक खरीदें..... ३४
१७. **मोटा** के प्रसंगों के साक्षी हैं ३५
१८. भावप्रधान विषयों पर शास्त्र ३५

१९. दीक्षा-विधि ३७
२०. **मोटा** की भजन-भक्ति ३९
२१. कर्म का तत्त्वज्ञान ४२
२२. **मोटा** का काम– सब को प्रेम करना ४३
२३. श्रीबालयोगी की आज्ञा के अनुसार साधना ४४
२४. दान, परमार्थ की समझ ४५
२५. विरोधियों के प्रति गांधीजी का व्यवहार ४७
२६. समय का अभिज्ञान ५०
२७. **मोटा**– कुशल अर्थशास्त्री ५१
२८. जिसका नमक खाया, उसे सावधान करने का फर्ज ५३

• • •

॥ हरि:ॐ ॥

दीक्षादिन (वसंतपंचमी) उत्सव के प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन वाणी

सूरत, ता. ४-२-१९७३

• श्रीसद्‌गुरु का ऋण चुकाने हेतु मौनमंदिर •

श्रीसद्‌गुरु का बहुत प्रेम-भक्ति-ज्ञानपूर्वक स्मरण हो । उनका आभार शब्दों से मानूँ वह किसी भी प्रकार से योग्य नहीं है । वह तो ऐसे सद्‌गुरु का ऋण तभी चुकाया जा सकता है, जब उन्होंने जो दीया मेरे में सुलगाया है, वैसा सद्‌भाव किसी जीव में सुलगाया जा सके । भगवान की कृपा से तो ही उनका ऋण चुकाया जा सकेगा । ऐसा ऋण चुकाने हेतु ये मौन-मंदिरें आश्रम में मैंने बनाये हैं । हमारे वहाँ कोई भाषण, कोई प्रवचन, ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा । चाहे दूसरी जगह शास्त्र-बास्त्र पढ़े जाते हो, परंतु स्वयं को मथने के सिवा, स्वयं द्वारा संग्राम किये बिना, यह ज्ञान कभी भी प्राप्त नहीं हो सकेगा । यह मेरे मन में एक निर्विवाद बनी हुई हकीकत है । स्वयं को ही मथना चाहिए । अनेक महात्माओं के पास गया हूँ । सत्संग के हेतु से, किन्तु स्वयं को मथने के लिए मुझे बहुत कम महात्माओं ने महत्त्व दिया है । आशीर्वाद और कृपा पर तो बहुत भार । आज भी हमारा समाज आशीर्वाद और कृपा माँग-माँग कर पंगु हो

गया है । मैं कहता हूँ कि आशीर्वाद और कृपा वैसे रास्ते में पड़े हुए नहीं हैं, भाई । दो पैसे की सौंफ पंसारी के वहाँ मुफ्त नहीं मिलती है, तो यह आशीर्वाद और कृपा माँगने की धृष्टता यह समाज करता है, उसके पर से उसका पूरा मूल्यांकन हो जाता है । पर उसके बारे में मैं बाद में कहूँगा ।

• *मोटा* समाज (भगवान) के मुनीम •

शुरू में तो यह उत्सव मनाने का जिन भाईओं के मन में आया वह मैंने कुछ किसी से कहा नहीं था, भाई । यह उत्सव इसलिए ही मनाने देता हूँ । मैं तो छोटा सा आदमी हूँ । ज्यादा से ज्यादा तो लोग चाहे जो उपमा दे, ''संत महात्मा'' चाहे वे कहे परंतु गलत बात है । मैं तो इनमें से कुछ भी नहीं हूँ । मैं ज्यादा से ज्यादा तो इस समाज का छोटा सा अदना में अदना एक नौकर हूँ । यह मैंने महसूस किया है— मेरे दिल में लगा है कि यह समाज बैठा नहीं होगा, वहाँ तक यह स्वराज मिला होने पर भी खप का नहीं है । हमारे इस समाज के जीवन में इतनी सारी कमियाँ हैं; यह कमियाँ मेरे अकेले से दूर हो सके ऐसी नहीं हैं । किन्तु मेरे से हो सकता है, वह मैं करता हूँ । पर मैं कौन मात्र ? मैं यानी तो समाज, और समाज मुझे मान देता है । इसलिए मैं कहता हूँ । समाज न दे सकता होता तो में किस तरह कर सकता ? समाज का ही सब अच्छा प्रताप

है । मेरा नाम गाया जाता है, वह गलत गाया जाता है । लेकिन जैसे किसी सेठ के वहाँ दो-चार-पाँच मुनीम हो और कोई मुनीम अच्छा काम करता हो, तो कहते हैं कि फलाना मुनीम ने यह किया; उस तरह मेरा नाम बोला जाता है । बाकी उसके पीछे तो समाज बैठा है । इसलिए इन सब भाईओं को जिन्हें विचार सूझा पाँच-दस-पंदर व्यक्तिओं ने इकट्ठे होकर हम **मोटा** का यह उत्सव यहाँ मनावें और उन्हें रकम मिले ।

• स्वास्थ्य के लिए स्नानागार बनाओ •

मेरे पर ऋण (समाज के उत्थान के कार्य के लिए हुए खर्च का) भी था । साहब, इस सुरत में कुछ कम धनवान नहीं हैं, परन्तु किसी को यह नहीं हुआ कि हम लड़कों का आरोग्य जिससे सुधरे, तंदुरस्ती बक्षे ऐसा एक सुंदर स्नानागार बनाएँ । यह मुझे चोखावाला ने कहा । चोखावाला हमारे गाँव के हैं । तीन-चार जगहों पर उन्होंने भाषण किये, पर कोई तैयार नहीं हुआ । उन्होंने मुझे कहा, ''**मोटा,** तू हीं करेगा तो होगा ।'' मैंने कहा, ''भाई हम करें; मुझे तो बहुत ही पसंद है ।'' ये युवा लड़के-लड़कियाँ तैरना सीखे और हमारे शहर में ऐसा स्नानागार हो । अब बाग जितना संपूर्ण उसका महत्त्व जागा है । **जिस शहर में स्नानागार न हो, वह शहर नहीं कहा जाएगा ।** हमारे वहाँ अभी तो बहुत कम एक, एक स्नानागार तो बहुत कम है । अहमदाबाद

में आठ हैं । अहमदाबाद की आप प्रतिष्ठा सुनिए । धन-दौलत देने में, बहुत उदार नहीं ऐसा कहा जाता है । फिर भी वहाँ आठ स्नानागार हैं । हमारे वहाँ एक ही है, बहुत मुश्किल से । अभी तो कई करने चाहिए । पर मेरे पास पैसे नहीं हैं । मैं तो आज भी करूँ । पर पैसा दे तब, इसके लिए पैसे कम पड़ते हैं । बाल-स्नानागार किया । उसमें भी मुझे नौ-दस हजार कम पड़ रहे थे । हमारी कोर्पोरेशन को पच्चीस हजार दे भी दिये हैं । वह सुरत के बच्चों के लिए ही है । उसे भी यह सब पैसे कम पड़ रहे थे ।

• आश्रम का संचालन बिलकुल मितव्ययिता से •

इन सब भाईओं ने इकट्ठा मिलकर जो मेहनत की, प्रभुदासभाई ने उनको जो टेका दिया और मेरे जैसे आदमी को मदद मिली— उन्होंने ऐसी सहानुभूति, सहारा दिया, प्रेरणा दी और स्वयं प्रेम से प्रमुख रूप से उपस्थित रहे । हमारे प्रत्येक कार्य में भी उपस्थित रहे और उनका समय पर आने का स्वभाव जानकर मैं तो बहुत राजी हुआ । तब ये सब भाईओं ने कितने-कितने हाथों से यह कार्य किया और कितने भाईओं ने ऐसा काम किया कि हम प्रभावित हो जाँय । जिनके बारे में कोई अनुमान नहीं, ऐसे भाईओं ने कार्य किया है इसमें । और कितने ही भाइयों ने अपना काम छोड़कर इसके पीछे ही लगे रहे और इतनी अच्छी मुझे मदद की । मुझे यानी मैं तो कहता हूँ कि समाज को मदद की और मैं कुछ

ये पैसे को आश्रम में खा जानेवाला नहीं हूँ । बाहर से आनेवाले पैसों में से एक पैसा भी हम आश्रम में खर्च नहीं करते हैं और बहुत कम खर्च से जीते हैं । मैं तो गांधीजी के जमाना दरमियान आश्रमजीवन जीता था । तब मैंने हरिजन सेवक संघ के आश्रम चलाये हैं । उससे भी कम खर्च में हम जीते हैं साहब ! वे आश्रम स्वयं मैंने चलाये हैं । उनसे भी अधिक कम खर्च में हम जीते हैं । हिन्दुस्तान में मैं सीना ठोककर आज आप सब के सामने कह सकूँ ऐसा है कि हिन्दुस्तान के अनेक आश्रमों में मैं घूमा हूँ– सत्संग के लिए लेकिन वहाँ ओ..... बिगाड़ और प्रतिदिन मिष्टान्न होता है । मैं कहूँ कि अबे ! ब्रह्मचर्य का पालन किस तरह कर सकोगे ? पर आज भी वहाँ ऐसा ही चलता है ।

• आश्रम द्वारा दी गई दान की रकम की संभाल •

श्रीमोटा : भट्ट साहब को कैसा है मोदी साहब ?

श्रीमोदी : .....

श्रीमोटा : (एक स्वयंसेवक को) यहाँ कुर्सी पर उन्हें बिठाओ ।

श्रीमोटा : इसमें बहुत लोगों ने पंद्रह-बीस भाइयों ने इतनी सब मेहनत की है पर वे सब मुझे कहते थे कि **मोटा,** जहाँ गये वहाँ हमें लोगों ने प्रेम से पैसे दिये हैं । कहते थे कि यह **मोटा** का काम अच्छा है, क्योंकि उसमें

एक पैसा भी बेठिकाने नहीं जाता है । साहब, देखिए.... यह मेरा शरीर नहीं होगा, तब लोग प्रशंसा करेंगे । मैंने बहुत सारे ट्रस्ट भी देखें है । वहाँ भी पैसे बेठिकाने ..... । पर मेरे पैसे ऐसे हैं कि सुरत में यह अपने कोर्पोरेशन में तैरने की स्पर्धा के लिए पैसे दिये थे । वह तैरने की स्पर्धा पूरे हिन्दुस्तान में सब से पहली हुई । किसी भी जगह ऐसी नदी तैरने की स्पर्धा नहीं हुई है । लेकिन उसमें मेरे रुपये कायम रहे और वह सद्वृत्ति-सद्प्रवृत्ति लंबे समय चला करे । एक पैसा उसमें से बिगड़े नहीं । पैसों का ब्याज आये वह उन लोगों को दे देने का । एक पैसा भी उसका Administrative Expenditure यानी कि कार्यालय कार्यवाही के लिए जो पैसा खर्च हो, वह पैसा भी उस रकम में से खर्च नहीं किया जाएगा । एक-एक पैसा समाज का सद्व्यय हो, एक पैसा भी बिगड़े नहीं उसकी दरकार भगवान की कृपा से रखी जाती है । ऐसा सब काम गांधीजी के समय में भी मैंने किया है । **बीस साल तक गुजरात के हरिजन सेवक संघ में परीक्षितलाल के साथ मैं मंत्री था; इसलिए यह सब वहाँ भी गांधीजी जीवित थे, तब भी खादी संघ तथा अन्य सभी जगह घोटाले हुए थे, इसलिए यह सब इतनी दरकार भगवान की कृपा से रखी जा रही है ।**

व्यक्ति से हो सके उतनी सब दरकार । एक पैसा भी बिगड़े नहीं । एक पैसा, क्योंकि यह भगवान का पैसा है । इसलिए आश्रम में भी हम इतनी मितव्ययिता

से जीते हैं । कोई दिन हमारे यहाँ मिष्टान्न नहीं बनते हैं । भजीये, साहब ! मुझे बहुत पसंद सही, परंतु हमारे यहाँ आश्रम में नहीं बन सकते । यह acidity हुई तब हलुआ खाना होता है । हलुआ गुड़ का हो तो अच्छा; जल्दी हजम हो जाय । परन्तु मेरे से नहीं हो सकता । साहब, गाँव में किसी को यह देने के लिए कहता हूँ ।

हमारे रावजीकाका घी देवे अंदर से खुश होकर दे तो अच्छा लगे तो खावें, नहीं तो अब अंदर दिल से राजी नहीं हैं हमारे पर ।

श्रीमोटा : काँटावाला साहब, जरा सिफारिश करना यार । मेरी सास का घी भी नहीं देता है । पहले तो हर समय देते ही थे, हमें कहना नहीं पड़ता । लोटा भर ही देता था, किन्तु अब हम कुछ बिगड़ गये होंगे । या तो वे बिगड़े हों या तो मैं बिगड़ गया हूँ, पर हमारे पर उनकी मेहरबानी कम हो गई है । वे आपके दोस्त हैं तो जरा सिफारिश करना ।

• ठक्करबापा की प्रस्तावना— *मोटा* की कर्मठता का प्रमाणपत्र •

यह लड़का मरने का हुआ है अब और सच कहता हूँ साहब । शरीर तो लंबी अवधि तक किसी का नहीं टिकता है । इन सभी भाइयों ने इतनी मेहनत की है, तब मैं तो कई बार कहता हूँ, "मेरा भगवान हजार हाथवाला है, वह हजार हाथवाला मुझे मदद करता है ।" अनेक जगह मैंने देखा । आज तक

अनेक काम हुए हैं । मेरे जैसे भिखारी मनुष्य साहब, बिलकुल सच्चे अर्थ में कहता हूँ साहब, मेरे पास पैसे नहीं हैं । २० साल तो देश की सेवा में मैंने बिता दिये और बहुत मस्ती से सेवा की है । मेरे गुरुमहाराज इतने सारे कार्यदक्ष और व्यावहारिक कि.....''यह ठक्करबापा की प्रस्तावना लो ।'' मैंने कहा, ''आध्यात्मिक बाबत में ठक्करबापा क्या समझे ?'' परन्तु आज मुझे काम में आ रहा है । उन्होंने मेरे बारे में लिखा है कि ''यह लड़का कैसा काम करता था ? परीक्षितलाल हैं, रविशंकर महाराज हैं, तब उन सब की यह जो प्रस्तावना ली थी, वह उपयोगी हुई, पता लगता है, इस लड़के ने कैसा काम किया है ।''

• असह्य रोगों में भी साहित्य का सर्जन •

आज भी यह मेरा शरीर तो टूटा हुआ ही है । आज तो बोलने की मनाई जैसी बात है हंअअ..... सुबह चार बजे बाद इतना सख़्त दर्द उठा, वैसा अहमदाबाद में उठा था और मैं काँटावाला साहब के घर पर ही था और वहाँ से मुझे होस्पिटल में दाखिल करवाया गया । पेट को चीरने की बात थी, परंतु उसी समय ये काँटावाला साक्षी हैं ऐसे वैसे बात नहीं करता हूँ– तब मैं ''सद्गुरु'' पर लिखता था । वहाँ उनको बिठाकर लिखाया । मैं बोलता गया । इतना भारी दर्द होता था, उस स्थिति में सद्गुरु पर मैंने उनको लिखाया था और वे उसे लिख लेते थे । पर आज भी चार बजे बाद ऐसा ही दर्द उठा; मैंने

चाय पी फिर मुझे पता था कि आर. के. तो नहीं हैं, भट्ट साहब पास में हैं, इसलिए हमारे सिविल सर्जन चौहाण साहब को फोन किया ।

श्रीमोटा : (बीच में से एक स्वयंसेवक को) ऊपर मत लाना, बा को । बा, पैर पड़ता हूँ । नहीं यहाँ रखो, वहाँ बैठने दो, इस कुर्सी में बिठाओ । इस बड़ी कुर्सी में बिठाओ भाई । ये हमारे भीखुकाका के बा हैं । बा बैठिए ।

यह इतने सारे भाइयों ने बहुत मदद की; आकस्मिक रूप से आये भाइयों ने भी बहुत मदद की । उन सब भाइयों का मैं आभार मानता हूँ । वास्तव में तो मैं मेरे भगवान का आभार मानता हूँ कि कैसे कैसे मनुष्यों कों वह प्रेरणा देकर, प्रेरणा दिलाकर यह भगवान का काम करते हैं और इस साल भी मैंने दस लाख के काम लिए हैं, साहब । और मेरे गुरुमहाराज कहते कि, ''बेटा, ऐसे काम करना कि जो किसी की नजर भी न पहुँचती हो; किसी के ख्याल में भी न आये ।'' आप सब को आश्चर्य होगा कि ऐसे कौन से काम होंगे ? यह तो **मोटा** क्या बोल रहे हैं ? पूरे हिन्दुस्तान में अपने सुरत में नदी में तैरने की स्पर्धा, नावों की स्पर्धा, समुद्र में नावों की चालीस मील की स्पर्धा, यह सब हमने आयोजित की, आश्रम ने । कोई ठिकाने हिन्दुस्तान में नहीं मिलेगी । समुद्र में तैरने की स्पर्धा कोई ठिकाने नहीं । इसी तरह अलग-अलग काम हुए हैं, वह भी किसी जगह किसी के ख्याल में नहीं आये इस तरह के काम हैं । और आज मेरा शरीर

है, नहीं होगा तब वे लोग कहेंगे कि यह **मोटा** ने अच्छे काम किये थे, परंतु हमारा समाज कब्र को पूजनेवाला है । उसका मुझे विरोध नहीं है । मुझे तो मेरे हिस्से में आया हुआ कर्म करना है और वह ऐसे शरीर से भी करता हूँ । ऐसा शरीर होने पर भी मैं किसी दिन कार्यक्रम तय हो तो मैं छोड़ता नहीं हूँ । काँटावाला साहब बैठे हैं । बड़े आदमी हैं । बड़े से बड़े अमलदार थे, हमारी सरकार के । उनके वहाँ ही मैं था, डॉक्टरों ने जाने की मनाई की थी । आपको दो-चार दिन रहना पड़ेगा । मैंने कहा, 'अशक्य बात', मेरा जो कार्यक्रम है, उस मुताबिक जाऊँगा और हम तो घुट्टी में ही यह सीखे हैं ।'' डाक्टर कहे, ''जा नहीं सकते; आपका शरीर ऐसा है, हम रजा दें तो तो हम मूर्ख कहलायेंगे । परन्तु मैं तो गया ही मेरे कार्यक्रम के अनुसार । आज भी मेरी ऐसी स्थिति थी । डॉक्टर आर. के. देसाई आये थे । चौहान को सुबह फोन करवाया कि, ''भाई, पेट में बहुत दर्द है; जरा आ जाइए तो अच्छा । तुरत ही आएँ; फिर उन्होंने आर. के. देसाई को बुलाया, आर. के. आएँ, प्रदीपभाई आएँ, फिर तो दो सूई लगाई उन्होंने तो । उसके बाद कहा कि– **मोटा,** बोलना नहीं । शाम का कार्यक्रम—दोपहर का कार्यक्रम मेरा बंद है भाई । इस समय तो मुझे बोलना ही चाहिए । भजन होंगे, भाई । प्रश्नोत्तरी के लिए डेढ़ घंटा बोलना है, वह मैंने बंद किया है, अब डॉक्टर का भी कहा मानना चाहिए । अभी तो मुझे बोलना ही चाहिए । वह मेरा धर्म है, उस धर्म में

से मैं पीछे नहीं जा सकता हूँ। प्रश्नोत्तरी इसलिए मना करता हूँ, क्योंकि लोग जो प्रश्न पूछते हैं, वह मैं मानता हूँ, चौकस Superficial (छीछले) हैं; बुद्धि की खुजली जैसे कह सकते हैं। उसके अनुसार व्यक्ति को कुछ करना होता नहीं है, उसमें गहरे पैठना भी नहीं है, सिर्फ पूछने के लिए पूछते रहते हैं। इसलिए यह हिस्सा मैं छोड़ देता हूँ और अब भविष्य में मैं रखनेवाला भी नहीं हूँ। दोपहर का कार्यक्रम होगा तो भजन या ऐसा कुछ होगा; परंतु प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम अब मैं नहीं रखूँगा। अब मैं दीक्षा पर आता हूँ। फिर से प्रमुख साहब का और जिन भाइयों ने यह सब कार्य किया, उसके लिए फिर से उनका मैं बहुत-बहुत आभार मानता हूँ और मेरा भगवान हजार हाथवाला जो हैं, वह इन लोगों को बरकत दें, उनके उद्योग-धंधे-व्यापार जो कुछ हो, उनके संसार-व्यवहार में अनेक प्रकार से मेरा हजार हाथवाला भगवान उन सब को बरकत दे ऐसी मेरी प्रार्थना है।

• दीक्षा अर्थात् •

दीक्षा अर्थात् दीक्षा का अर्थ मैं आपको समझाऊँ Dedicated Life (समर्पित जीवन); अर्थात् हमारे जीवन को सभी प्रकार से और सब भावों से जीवन के किसी उच्च से उच्च आशय में आहुति देना। तब मुझे खबर नहीं थी भाई। १९२१ के दिसम्बर का महीना था और गुरुमहाराज मुझे दीक्षा देनेवाले थे। परंतु मुझे पता नहीं था। मैं तो साधुओं

को तब ऐसा मानता था कि, "Economical waste on the society" समाज पर ये लोग साधु-संन्यासी आर्थिक भाररूप हैं । किस तरह ?

श्रीमोटाः (बीच में से) ओ शाह साहब ! (नवसारी में उस समय श्री एच. एम. शाह, एक्जीक्युटीव इंन्जिनीयर थे) तब तो मैं ऐसा मानता था और उस साधु ने मुझे पकड़ लिया । किन्तु उसके पहले यह थोड़ी भूमिका हो गई थी । मेरे शरीर को फेफरुं* (मिरगी जैसा एक रोग) की बीमारी थी । फेफरुं की बीमारी भारी, हिस्टीरिया से भी कहते हैं भारी होता है । मैं तो फेफरुं और हिस्टीरिया में कुछ समझता न था । हिस्टीरिया का मुझे रोग हुआ है, ऐसा मैं सब को कहता था । परंतु डॉ. आर. के. देसाई ने कहा, "**मोटा,** आप यह तो वैसे ही कहते हो । यह आपके शरीर को जो रोग हुआ उसे फेफरुं कहते हैं । तो साहब, फेफरुं लिखा तब तो आपने वह गलत छापा है ।" मैंने कहा, "अब पुनः छपाऊँगा तब लिख दूँगा की फेफरुं, भाई हिस्टीरिया नहीं ।" हिस्टीरिया तो फिर भी मिट जाता है, पर डॉक्टर ने कहा फेफरुं तो कभी मिटता ही नहीं ऐसी बीमारी है यह । यह आपको मिट गई यह हमारे लिए बड़े आश्चर्य की बात है । मैंने कहा, "भाई, भगवान के नाम से मुझे तो मिटा है ।" तब फेफरुं की बीमारी हुई शरीर को; इसलिए मैं नर्मदा तट पर गया था । उसमें मरने को भी– आत्महत्या करने को भी– तैयार हो गया था– कूद भी गया था; परंतु भगवान ने

* फेफरुं गुजराती शब्द है ।

बचाया । तब से मेरे मन में यह हुआ कि I am meant for something (मेरा जीवन किसी उद्देश्य के लिए है) । सचमुच कूद गया मैं और नदी में से किस तरह बवंडर उठा और मुझे बाहर डाल दिया, यह आज भी मेरी बुद्धि कबूल नहीं करती है । ऐसी यह आश्चर्ययुक्त हकीकत है, साहब । परंतु यह बनी हुई सचमुच शत प्रतिशत सच्ची हकीकत है । तब से मुझे जीवन के प्रति इतना उत्साह हुआ कि इस जीवन में भगवान ने मुझे बचाया है । इसलिए मेरा पूरा जीवन अब भगवान के लिए, और वैसे तो मैंने तय ही किया था—हाथ में गंगाजल लेकर, जब से गांधीजी के सेवा के कार्य में जुड़ा था ।

बहुत गरीबी थी । मेरी बड़ी भाभी, विधवा मा, ये सभी बहुत काम करते थे । आज मेरे दूसरे तो कोई साक्षी नहीं होंगे । मेरी विधवा भाभी अभी भी गांधीजी के आश्रम में जीवित हैं । बहुत काम करते थे । चक्की में (अनाज) पीसते थे, (अनाज) कूटते थे और मेरी मा मुझे बहुत गालियाँ देती थी कि निकम्मे, इतना सारा पढ़ा, तुझे अच्छी नौकरी मिलती थी, वह ली नहीं और हमारे नसीब में यह पसीना ही रहा । मैंने कहा, ''पसीने की रोटी तो महा पुण्य की है, उसके समान कोई पुण्य नहीं है । पसीने की रोटी हम खाते हैं मा । मा कहती, ''निकम्मे, तुझे कमाना नहीं है, इसलिए यह कहता है ।'' तब उसे मैं कैसे यह बात समझाता ? परंतु मेरे मन से आज मैं कहता हूँ कि वह पुण्य की हमारी रोटी थी । पीस-पीस कर जो रोटी हम खाते उसकी मधुरता कुछ और थी, आज वह मधुरता नहीं आती है ।

तब उस साधु-महाराज ने मुझे दीक्षा देने का तय किया, तब मैं दीक्षा-बीक्षा में कुछ समझता नहीं था । फिर उसने मुझे समझाया कि ''अब तेरा जीवन संसार के लिए नहीं है भाई ।'' ''कि अबे, मेरी मा है, इन लड़कों को मुझे पढ़ाना है, मेरी जिम्मेदारी है । उससे मैं मुँह नहीं मोड़ सकता ।'' तब कहा, ''तुम्हें संसार में रहकर मिले हुए कर्म करना है, परंतु संसार के लिए नहीं ।'' ''तब किसके लिए अबे ? तू कहता है कि इस संसार में रहना है, यह सब काम करना है ।'' तब मेरे भाई छोटे थे । मूलजी और सोमाकाका यहाँ हैं । पधारे हैं कि नहीं ?

श्रीमोटा : सोमाकाका आये ? कहाँ है ? आ पहोंचे ? यह मेरा सगा भाई है । कितने बजे आये ?

श्री सोमाकाका : ''मोटा, अभी आया ।''

श्रीमोटा : अच्छा, अच्छा भाई ।

उन लोगों को पढ़ाने की भी जिम्मेदारी मेरी और तब हम बहुत कम से कम पैसे लेते थे । मेरे सिर पर सात-आठ व्यक्तिओं के पालन-पोषन की जिम्मेदारी थी, जब कि परीक्षितलाल, हरिवदन ठाकोर और हेमंतकुमार नीलकंठ थे, किन्तु एकलराम । और मुझे सात व्यक्तियों का पालन करना था । परंतु हम तो मामूली..... मामूली रकम लेते थे; नहीं तो सेवा का नाम उड़ जाय न ? आज तो हमारे ही क्षेत्र में काम करने के चारसौ चारसौ रुपये लेते हैं । खादी के क्षेत्र में भी काम करनेवाले कितने रुपये लेते हैं ? आज सेवा का क्षेत्र अब मैं कहता नहीं ।

परंतु यह सब मेरी जिम्मेदारी। मैंने कहा, ''महाराज, आप मुझे, तो कहते करना जरूर। मैंने कहा तब कि किसके लिए ? आप कहते हो कि संसार के लिए तो नहीं।'' तब कहा नहीं, संसार को तुम्हारे मन में से ही निकाल डालो।'' मैंने कहा, ''ऐसे नहीं निकल सकता। भाई, आप कहो इससे एक झटके से मन में से निकल जाय ऐसा नहीं हो सकता।'' उन्होंने कहा, ''भाई, लेकिन तू भावना विकसित कर।'' मैंने कहा, ''हाँ, यह बात सही; तो कौनसी भावना विकसित करूँ ?'' तो कहा कि, ''**सब कुछ भगवान-प्रभुप्रीत्यर्थ करने का।'' यह बात मुझे पसंद आ गई, भाई। कि यहाँ वहाँ भगवान ही बसा है। अणु-अणु में उसकी शक्ति है।** और यह हमारे में भी जो चल रहा है, हमारा यंत्र वह भी भगवान की शक्ति के कारण। **यह संसार भी भगवान की शक्ति के कारण ही चल रहा है। जो कुछ होता है, वह भगवान की शक्ति से होता है, वह बात मेरे गले उतर गई।** इसलिए उस प्रकार की भावना मैं विकसित करूँगा।'' तब जो अब तुम्हें पूरी जिंदगी भगवान के लिए ही जीना है। यह बात मुझे पसंद आ गई, बराबर है। प्रभु-प्रीत्यर्थ कर्म करना, भाग जाने की बात नहीं। वह (बात) मुझे बहुत पसंद आ गई। क्योंकि संसार में भी गृहस्थाश्रम में भी कोई भाग सकता नहीं है, वह भाग सकता भी नहीं है। बलपूर्वक से भी स्वार्थ के कर्म करने ही पड़ते हैं, छुटकारा नहीं है। तब मुझे तो बहुत आनंद हुआ कि **There**

is no escapism. संसार में नहीं है । गृहस्थाश्रम में नहीं है तो भगवान के मार्ग में तो हो ही सकता कैसे ?

हमारे देश में लोग साधु-संन्यासी बन जाते हैं, वह मेरी समझ की दृष्टि से मुझे बराबर नहीं लगता है । कोई विवेकानंद जैसा, कोई शंकराचार्य जैसा, कोई रामकृष्ण जैसा, कोई रमण महर्षि जैसा हो जाए, बराबर है । जिसे अग्नि अणु-अणु में, रोम-रोम में, नस-नस में भगवान के लिए ऐसा जीवंत चेतनाग्नि जिसमें प्रज्वलित हो और जिसका मन हमेशा भगवान में ही लीन रहा करता हो, उसे ही अधिकार है—संन्यास का—अन्य को अधिकार नहीं है । यह तो मेरी ऐसी समझ है । मैंने लिया नहीं संन्यास । मैंने गेरुए कपड़े नहीं पहने हैं, परंतु मुझे जीना है भगवान के लिए । परंतु भगवान को हम यदि मानते हों और प्रेमभक्ति से ज्ञानपूर्वक यदि मानते हों तो उनकी सेवा होनी चाहिए । यह बात भी मेरे गले उतर गई— सेवा तो होनी ही चाहिए ।

• समाज—भगवान का व्यक्त स्वरूप •

तब भगवान तो बिना रूप का है, उसकी सेवा कैसे होगी ? तो भगवान पूरे समाज में, संपूर्ण ब्रह्मांड में, अणु-अणु में व्याप्त है । इस समाज की सेवा ही भगवान की सेवा है । यह तो समाज अर्थात् आज के— आज के वातावरण में समाज शब्द प्रचलित है, इसलिए समाज

(शब्द का) उपयोग करता हूँ, बाकी तो मेरे दिमाग में समाज नहीं है कोई काल में । मेरे दिमाग में तो मेरे भगवान ही बिराजमान हैं । मैं मेरे भगवान की ही सेवा कर रहा हूँ । मेरे मन से यह शत प्रतिशत की हककीत है । जब किसी समय दिमाग को जाँचनेवाला यंत्र निकलेगा तब, (मेरी तो) आज भी तैयारी है, मेरे दिमाग में रखकर देखें कि समाज है ? या रागद्वेष है । काम, क्रोध, मोह है या भगवान है ? मैं भगवान के लिए ही यह काम करता हूँ । इस समय भी जो काम कर रहा हूँ, वह भगवान के लिए, प्रभु-प्रीत्यर्थ के सिवा दूसरा कोई संकल्प मेरे मन में नहीं है अब ।

और कोई कहेगा कि भाई आप तो बैठे-बैठे बोलते रहते हो । कुर्सी में बैठे रहकर वहाँ । परंतु बिना सबूत के तो इस जगत में कोई मानेगा नहीं । जिसे सबूत चाहिए तो सबूत भी है । मेरे शरीर में इतने दर्द हैं साहब । फिर से गिनाता हूँ, दिमाग में है वह झामर (Glucoma) है, आँखो में मुँहासे (Acne) हैं, गले में भी हैं, यह दमा है, acidity है, स्पोन्डीलाईटीस अर्थात् गले में भी मनके में से गद्दी बैठ गई है और कमर में से भी खिसक गई है । इससे कितना दर्द होता है, वह यह डॉक्टर है समझता है, मसा है, चमड़ी का दर्द है, Fluctuating बी. पी. है, ऐसे दूसरे दर्द हैं । यह acidity तो अभी हुई है फिर । और दमा फिर हुआ है । तब इन सब रोगों के बीच मैं किसी दिन

मेरा प्रोग्राम- कार्यक्रम बंद नहीं करता हूँ। इतना ही नहीं, किन्तु ये लगातार दर्द साहब ।

यह मेरा पेट काट डालनेवाले थे । अहमदाबाद अस्पताल में इतना जोरों से दर्द होता था, तब यह काँटावाला साहब को मैंने ''सद्गुरु'' पर काव्य लिखाये थे । आज भी आश्रम में बैठे-बैठे काव्य, भगवान के स्मरण में लिखा करता हूँ। कितनी सारी किताबें यह एक साल में छप चुकी हैं। जिसे देखना हो, वह देख ले। बैठे-बैठे मैं भगवान के भजन ही ललकारता रहता हूँ। ऐसे दर्द से पीड़ित मेरा सगा भाई है। वह कवि है। मेरे से भी उच्च कोटि का ..... हमारा मूलजीकाका । मूलजीभाई भगत कहलाता है। वह अस्पताल में आठ-दस मास से है। मैंने कहा, ''**मूलजीकाका तुझे कविता आती है तो बैठे-बैठे तू लिख न । इस दर्द में पड़ा रहा है तू । ''मोटा,** मैं किस तरह लिखूँ ? मेरा मन तो आठों पहर पल-पल इस मेरे शरीर के रोग में ही है। दूसरा कुछ मुझे सुझता नहीं है। और अखबार का शौकिन परंतु अखबार पढ़ नहीं सकता ।'' तब दर्द ऐसा है, शरीर का। दूसरा कुछ तुम्हें सूझने ही नहीं देता। परन्तु भगवान की कृपा से लिखता हूँ, यह हकीकत है ।

• समाज का काम वही भगवान की सेवा-पूजा •

तो सबूत तो हैं परंतु लोगों के गले नहीं उतरेंगे । परंतु मुझे उसकी कोई चिंता नहीं है । मैं कुछ भजन करता हूँ, वह कुछ किसी के लिए थोड़ा करता हूँ ? यह तो किसी को सबूत चाहिए तो ठोस सबूत हैं। इतने रोग हैं, परंतु मैं

घूमता रहता हूँ, कोई संसारी– गृहस्थाश्रमी नहीं घूमेगा । स्वयं के स्वार्थ के लिए भी नहीं घूमेगा साहब; यह मैं सच कह रहा हूँ, परंतु मुझे, मैं जिंदा हूँ, वहाँ तक यह भगवान का यज्ञ बंद न हो तो अच्छा । जहाँ तक चलेगा, वहाँ तक मैं करता रहूँगा, क्योंकि भगवान की सेवा तो करनी ही चाहिए । यदि मैं भगवान को मेरा स्वामी मानूँ, मैं उसका नौकर होता, मुनीम होता..... तो सेठ रखता मुझे ? निकाल ही देता न ? और पीढ़ी में यदि हम मुनीम हों या नौकर हों और यदि काम न करें तो कोई सेठ हमें रखेगा सही ? उस तरह यह भगवान मेरा सेठ है । मैं तो उसका अदना में अदना नौकर हूँ, इसलिए मुझे उसका काम करना चाहिए । उसकी सेवा करनी चाहिए । **उसकी सेवा, उसके चरणकमल में रोज-रोज प्रेमभक्तिज्ञानपूर्वक चढ़ाने के लिए यह समाज के कर्म, वह मेरे लिए पुष्प हैं, फूल हैं । इस भावना से समर्पणांजलि रोज-रोज भगवान को ऐसे कर्मों द्वारा ही करता हूँ कि ऐसे कर्मों, ऐसे कर्मों समाज की मदद से ही होते हैं । मेरे तो पैसे है नहीं ।**

• श्रीमद् राजचंद्र का त्याग •

मुझे भी कई बार निजी पैसे चाहिए सही साहब । सच कहता हूँ आपको । यह अब लोग समझने लगे हैं और कोई मुझे देते भी हैं सही मुझे कि, ''**मोटा,** यह खास आपके निजी खर्च के लिए ही ।'' वैसी रकम मैं अलग रखता हूँ । भाई

(नंदुभाई) के पास उसका अलग हिसाब है । मेरे बही में भी रहते हैं, परंतु बहुत कम । क्योंकि मुझे किसी समय किसी को स्वयं अपने हाथ से देने की इच्छा है । भाई, इसको इतने रुपये दे दो । मुझे अभी एक जन को मैंने कहा, ''मुझे इसका बहुत कर्ज है । इसका कर्ज तो इस जन्म में मैंने किया नहीं है, परंतु मेरे पर उसका कर्ज है । देना है सात हजार रुपये । तो कहाँ से लाकर मैं दे सकता हूँ ?'' श्रीमद् राजचंद्र तो व्यापार करने गए थे । बहादुर आदमी । परंतु उसके पास तो ऐसे व्यक्ति थे कि जो उसे पैसे भी दे । रेवाशंकर जगजीवन की पीढ़ी आज भी चल रही है, वहाँ जाकर वे कमाए । लाख रुपये । एक पैसा उसने दिया नहीं घर में । कुटुम्ब में भी उसमें से । लाख रुपये हुए तब गादी पर से उतर गए । परंतु मेरे से अभी व्यापार करने जाना मुश्किल है । मेरा शरीर भी चले ऐसा नहीं है । इसलिए और छोटी सी रकम होने से उसके लिए जाना वह भी निरर्थक है न ! इससे मुझे नीजी रकमों की जरूरत पड़ती है सही । लोग मुझे अब प्रेम से देते हैं । वह भी मैं भगवान की कृपा ही समझता हूँ ।

परंतु मूल बात थी मेरी दीक्षा की । कि उसने दीक्षा देते समय मुझे कहा कि ''तेरा पूरा जीवन अब भगवान के लिए ही है– और कबूल है और बराबर है । और तुझे मिला हुआ यह कर्म तेरी मा है, विधवा भाभी है, छोटे भाई हैं, तुम्हारे भाई के, मेरे बड़े भाई गुजर गये थे, उसके दो बेटे । उनको पढ़ाना है । बेटी थी उसे ब्याहना था । यह सब था । किन्तु यह सब

भगवान के लिए करना । अब तुझे संसार में से यह माया, ममता, ममत्व, यह रागद्वेष, काम, क्रोध इत्यादि निकल जाँय उस तरह कर । बाद में यही दीक्षा ।

• श्रीबालयोगी की शर्तें •

पहले दिन तो पधारे । मुझे कहा, ''हमें एकांत में रहना पड़ेगा । मुझे एक बंगला ।'' अरे ! मैंने कहा, ''बंगला कहाँ से लाना ? मैं गरीब आदमी और आप बात करते हो बंगले की । आप ऐसे साधु-महात्मा होकर इतना समझते नहीं । यह गरीब आदमी बंगला कहाँ से लाए ?'' तो बोले कि उसके बिना नहीं चलेगा । अबे ! किन्तु खड़ा रहे । बोले कि सिर्फ बंगला नहीं चलेगा, एकांत चाहिए, पास में जलाशय चाहिए ।'' ''बाप रे !'' मैंने कहा यह तो दो शर्तें और जोड़ दी । तब मुझे पता नहीं था, आज हो तो मैं कहता । साधु-महाराज कोई महात्मा पुरुष कहे तो सामने दलील नहीं करना । तर्क नहीं करना । हमसे हो सके उस मुताबिक करना । यह मैं आपको अनुभव की बात करता हूँ । मैंने उस तरह किया हुआ है । तो उसके साथ हमें दलीलबाजी नहीं करना । हमसे हो सके तो करना, न हो सके तो नहीं करना । परंतु उसके साथ हमें दलीलबाजी नहीं करनी । परंतु तब मुझे अपने आप कुछ सुझा कि, मैंने कहा तो सही साहब, यह मेरे से हो सके ऐसा नहीं है, अशक्य लगता है, परंतु अशक्य का शक्य हो, तब ही भगवान की कृपा । उन्होंने ऐसा कहा मुझे । महाराज ने हंअअ..... बहुत युवा उम्र थी ।

• अशक्य का शक्य वही प्रभुकृपा •

फिर रोज मैं हरिजनवास में जाता । हरिजन का काम करता । मैं भजन गाता-गाता जाता, तब मुझे रोज बोहराओं के मोहल्ले से होकर जाना पड़ता । हम विद्यापीठ में गांधीजी के संसर्ग में रहे थे, इसलिए सलामआलेकुम करने की आदत पड़ गई थी और रोज हमारे प्रभुचंदभाई हैं वे इतना सब टाइम के अनुसार बरतनेवाले तो मुझे भी वही आदत कि मैं पाठशाला जाता तो मेरी घड़ी कोई भी मिला सके । इतना समय का पाबंद आज भी हूँ । मेरा भोजन दस बजे तो दस बजे ही । उस तरह रोज समय पर मैं जाता रहता । कासम साहब रोज उस समय, आँगन में मेरी सलाम कबूल करने खड़े रहते । वह भी रोज । परंतु आज मैं विचार में था । गुरुमहाराज ने कहा बंगला चाहिए, एकांत चाहिए, जलाशय चाहिए । मैंने कहा, ''यह बड़े ज्ञानी हुए हैं, उसे इतना ख्याल नहीं आता होगा यह गरीब लड़का बेचारा बंगला कहाँ से लाएगा ?'' और वहाँ होकर जाता रोज की सलाम करने की मेरी आदत चूक गया और बीस-पच्चीस कदम आगे बढ़ गया, तब मुझे याद आया कि अरेरे ! कासम साहब को मैंने सलाम की नहीं । हमारे नडियाद के लोग होंगे वे जानते होंगे । मेरे रावजीकाका जानते हैं । तो वापस आया मैं । मैंने कहा, ''कासम साहब, माफ करना । आपको आलेकुसलाम नहीं किया वह साहब मैंने भारी भूल

कर दी । कासम साहब ने कहा, ''लड़के वह अच्छा हुआ । परंतु तुम कुछ भारी विचार में हो ।'' मैंने कहा, ''हाँ साहब ! विचार में तो हूँ ।'' ''तो तुम मुझे कहो ।'' मैंने कहा, ''साहब, आपको कहकर क्या करूँ ?'' ''अरे भाई ! खुदाताला की मरजी से मेरे द्वारा तुम्हारा काम हो जाय ।'' मैंने कहा, ''साहब काम ऐसा है कि हो सके ऐसा नहीं है ।'' ''परंतु उसे कहने में तुझे क्या हर्ज है ?'' मैंने कहा, ''हर्ज तो कुछ नहीं है । तो कहता हूँ । मेरे घर एक ओलिया आये हैं ।'' ''ओहो ! तुम्हारा सुभाग्य है कि ओलिया तुम्हारे घर आये हैं । तो अब कहो भाई कि क्या माँगते हैं तुम्हारे ओलिया ?'' मैंने कहा, ''एक बंगला माँगते हैं ।'' कहने लगे, ''अपना बंगला है, तुम्हें दे देता हूँ । जाओ, जहाँ तक रहे उपयोग करो ।'' मैंने कहा, ''यह तो गजब की बात है ! परंतु साहब उसने तो साथ में दो शर्त रखी है कि एकांत में चाहिए ।'' ''तो अपना बंगला एकांत में ही है ।'' मेरे रावजीकाका ने बंगला देखा है । ''और भी'' मैंने कहा, ''दूसरी शर्त है पास में जलाशय ।'' तो कहने लगे, ''पास में जलाशय है, रामतालाब है वहाँ ।'' ओहो ! साहब उस समय इतना..... उस समय पर साहब, मुझे जो आनंद हुआ है वह मेरा दिल जानता है । उसने कहा था कि अशक्य का शक्य हो जाय, तब भगवान की कृपा प्रत्यक्ष है । मुझे तो पलभर ऐसा हो गया कि भागकर जाकर उसके पैर में पड़कर कह दूं कि मिल गया ।''

• आशीर्वाद, दर्शन, धोक देना यह सब छोड़ो •

परंतु हमें कर्म संदर्भ में वफादारी इतनी जबरदस्त कि नहीं, हमें कर्म है, वह पहला। मुझे जो काम करने का है, जो समय पर हाजिर होना है, वह बात पहले। इसलिए मेरे काम पर गया और फिर काम पूरा करके आखिर शाम को आया। **आकर नहाधोकर फिर उनको धोक दिया। आज भी जब-जब मेरे सद्‌गुरु के दर्शन करने गया हूँ, तब नहाये धोये बिना पैर नहीं पड़ा हूँ। और कभी भी जब जब धोक दिया होगा, तब नया संकल्प ऐसा किया है, पुष्प नहीं चढ़ाता हूँ, हार नहीं पहनाता हूँ, सिर्फ धोक नहीं दे रहा हूँ। परंतु उनको पैर पड़ना हो तो हमें कुछ समर्पण करना चाहिए। हमारा यह समाज तो खाली-खाली पैर पड़ता है।** मैं मना करता हूँ। भाई, यह दर्शन की बात छोड़ दो। हम यह दंभ का सेवन करते हैं, पर दर्शन के समय मन में तो इतना भाव उमड़ता है, इतना ज्यादा भाव होता है। साहब, मैं राजकोट में गया, तब मेरे पुराने सभी साथीदार गांधीजी के आश्रम में, उनके गांधीजी के भी साथीदारों, सब के नाम तो नहीं कहूँगा, परंतु बहुत बड़े आदमी। वे कहे, ''**मोटा,** हम तो दर्शन करने आये हैं।'' मैंने कहा, ''ऐसा खाली मत बोलो। यह आपका दंभ है।'' मुझे उनको यह कहने में बिलकुल संकोच नहीं हुआ। भाई नंदुभाई उपस्थित थे। मन में वैसा भाव उमड़े बिना मेरे साले दर्शन की बात करते हैं। यह दंभ छोड़ो। मेरा चले तो (इस समाज में) ऐसे कई दंभ चलते हैं।

इसलिए मैं मना करता हूँ। कोई भी मेरे सामने दर्शन की बात न करें। आशीर्वाद की बात करना नहीं। कृपा की बात करना नहीं। कृपा या आशीर्वाद पाने के पहले उसका काम करो। उसका मन प्रसन्न करो। उसकी कुछ सेवा करो, तो फिर बात करो। मगर यह दर्शन ..... बाहर गाँव से चले आते मेरे साले, फालतु पैसा खर्च करके। साहब, क्यों आये ? दर्शन करने। अबे भाई, इतने सारे पैसे खर्च करने की क्या जरूरत है ? **तुम्हारे घर बैठकर परमार्थ का कोई अच्छा काम कर, परमार्थ का। वह दर्शन है। यदि तुम्हें मेरे दर्शन करना है तो मेरा काम करो। वह दर्शन सच्चा दर्शन है।** यह गलत लोलुपता छोड़ दो। यह धोक देने की बात—हमारा समाज नामर्द हो गया है। यदि सचमुच भावना प्रकट हो तो आदमी मर्द बन जाय। जबरदस्त भावना में पराक्रम रहा है, शौर्य रहा है, धैर्य रहा है, सहनशक्ति रही है। भावना से जीवन में गुण प्रकट होते हैं, वह प्रकट न हो वहाँ तक यह पैर पड़ने का पालगपन सब निकल जाय वह उत्तम है।

• मन्नत नहीं– प्रभुस्मरण और प्रार्थना •

और कई मेरी मन्नत मानते हैं, उसकी मुझे मन में बहुत नापसंदगी है। साहब, गलत बात है। मुझे इससे पैसे भी मिलते हैं साहब, यह भी मैं कहता हूँ। यह आज मैं आप सब को जाहिर में कहता हूँ कि कोई भी मेरी मन्नत न मानें। यह गलत रिवाज है। समाज की अंधश्रद्धा

है, उसे तोड़ना चाहिए । हमारे समाज में इतना सारा बावलापन है । उस खेरालु में पचास-साठ हजार लोग जाते हैं । साली.....मुझे तो शर्म आती है, हमारी प्रतिष्ठा की । यह हमारा कैसा समाज है ! और लोग अंधे होकर भागते हैं । ऐसे महात्माएँ आते हैं । ऐसे चमत्कारों के पीछे पागल हुए हैं लोग । मैं कहता हूँ चेतो । यह गलत बात है । इसके पीछे भागो मत । जहाँ-जहाँ चमत्कार देखो, वहाँ आप बिलकुल मत जाओ ।

ऐसे लोगों के जीवन में चमत्कार नहीं होते हैं, ऐसा मेरा कहना नहीं है । परंतु कभी क्वचित् ऐसा निमित्त प्रकट हो, तब अपने आप होता है । दिखाने के लिए चमत्कार नहीं होते हैं; भले कोई भी करते हो, किन्तु दिखावट करने के लिए चमत्कार नहीं होते । सत्य सांईबाबा करते हैं न । तो जो कोई करते हो उनको मुबारक । प्रेमभक्तिपूर्वक सिर झुकाता हूँ । परंतु उससे आपको क्या लाभ हुआ भाई ? कोई करोडाधिपति हो, आपको क्या लाभ हुआ ? इसलिए मेरी तो समाज से प्रार्थना है कि यह दर्शन करने की, पैर पड़ने की सब बात छोड़ो ।

अभी मुझे डोक्टर ने इन्जेक्शन दिये हैं । एक नोवेल्जीन का और एक बार्गल का । इसलिए उन्होंने कहा, ''आपका गला सूखेगा, बोला नहीं जाएगा । इसलिए आप थोड़ा-थोड़ा पानी पीते रहना ।'' इसलिए यह बात आपको जानने के लिए कही, क्योंकि आप सब मेरे भगवान हो । सच्ची हकीकत आपको बतानी चाहिए ।

एक भाई हैं, वे अहमदाबाद के हैं । हर महीने यह मुझे लिफाफा भेजते हैं । अंदर कुछ भी लिखा नहीं होता । बीस रुपये भेज देते हैं । इतने नियमित रूप से । उसको मेरी बहुत प्रार्थना है । आपमें से कोई हो, उसको संदेश मेरा कह सकते हो तो कहना । हम उसे रसीद दे सकें । वैसे तो हम हिसाब में जमा तो करते हैं, बही में उसकी रसीद भी बनाते हैं, अनामी रूप से । परंतु हर महीने नियमित दिया करते हैं ।

तब यह मेरी कोई मन्नत मत मानना भाई । मेरी आपको फिर से बिनती है । यह गलत बात । हाँ, आप आकर मुझ से बात करो, वह मैं सुनने को तैयार हूँ । मेरे से हो सकेगा तो मैं प्रार्थना भी करूँगा । प्रार्थना में बहुत मानता हूँ । बहुत प्रार्थना में मानता हूँ और प्रार्थना की शक्ति भी बहुत भारी है, यह भी मैं जानता हूँ । अनुभव से, प्रयोग करके कहता हूँ । मेरे जीवन में मैंने प्रार्थनाएँ की हैं । आपातकालीन स्थिति में । मौत सामने आकर खड़ी हो गई हो, उस समय प्रार्थना की है । वैसे ही नहीं कहता हूँ ।

मुझे साँप ने काटा था । ठक्करबापा साथ में सोये हुए थे । अभी श्रीकांत शेठ तो जीवित हैं, उनसे जाकर कोई भी पूछकर आ सकता है । छिहत्तर (७६) घंटे तक नोन-स्टोप । अखंड भगवान का स्मरण जोर से चलता रहा था । अशक्य बात । किसी से हो नहीं सकता । भगवान की शक्ति बिना, बिना खाये-पिये ७६ घंटे । और फिर मुझे बीस घंटे बाद ठक्करबापा मोटर में ले गये । आणंद में रायण की अस्पताल में । डॉ. कूक की अस्पताल में । वहाँ उन लोगों ने मेरी आंतो को धोया, पेट

साफ किया और सब निरीक्षण किया कि यह लड़का जिंदा है किस तरह से ? परंतु वे लोग ईसाई लोग, भगवान को हम लोगों से ज्यादा माननेवाले । लेकिन तब भी मेरा भगवान का स्मरण चालू था । तब इस भगवान की मैं, भगवान की भक्ति करता हूँ, वह किसी को दिखाने के लिए नहीं करता हूँ ।

• *मोटा* के पुस्तक खरीदें •

मैं किसी से कहता नहीं हूँ, परंतु मेरे पास पैन्सिल और नोटबुक सतत तैयार ही रखता हूँ। इतने सारे दर्द में ऐसे भगवान के भजन होते हैं और कितनी सारी पुस्तकें छप गई ! परंतु मेरी तो आप सब से बिनती है कि इतना सारा आप सूरत के लोग करते हो । यद्यपि सूरत की– सूरत की प्रजा इसमें बहुत हाजिर नहीं है । बहुत ही-बहुत ही कम लोग हैं । तो भी यदि मेरी आवाज उन तक पहुँचती हो तो कहता हूँ भाई, यह मेरी पुस्तकें लेना । क्योंकि उन पुस्तकों के पैसों में से एक भी पैसा मैंने खर्च नहीं किया है । **यदि मैं सब भगवान का कहता हूँ तो बुद्धि मेरे बाप की कहाँ से हुई ? बुद्धि भी मेरे भगवान की है ।** लाख रुपये के उपरांत मैंने इसमें परमार्थ में खर्च कर दिये हैं । पूरी रकम । बही में जमा हो जाते हैं । उस बहाने आप एक छोटी पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति दस-दस पुस्तकें बेच देवे तो मुझे कितना लाभ हो जाए ? यह भी आप सोचना भाई ! यहाँ पुस्तकें भी रखी हैं । तो जो सब भाई थोड़ी-थोड़ी लेंगे तो भी मुझे मददरूप है । क्योंकि मुझे पैसे चाहिए ।

• *मोटा* के प्रसंगों के साक्षी हैं •

बिना पैसे के कोई काम नहीं होते हैं । उस निमित्त से भी मुझे पैसे मिलते हैं और कोई कहे, ''**मोटा,** हमारे लिए लिखिए, हम पुस्तकें छपवायेंगे, पैसे देंगे ।'' तो मैं लिखता हूँ । वैसे नहीं लिखता हूँ, साहब । कोई न कोई व्यक्ति मुझे कहता है और इतना ही नहीं, आपको दूसरा कोई सबूत चाहिए तो यह **मोटा** जानता है । तो दूसरा सबूत दूँ । भगवान बुद्धिहीन को भी विद्वान बनाते हैं । कि मैं जीवंत उदाहरण हूँ । मैं हिमालय की गुफा में से आकर नहीं बोलता हूँ । उसका आपको प्रमाण नहीं मिलेगा । मुझे तो मेरे साथी जीवित हैं । आज भी वे कह सकते हैं कि कैसे मैं भगवान का भजन आदि करता था । ऐसे एकांत में, ऐसी भयंकर जगहों पर जहाँ सिंह रहते थे, वहाँ मैं रहा हुआ हूँ । यह हकीकत यह सब जानते हैं । हिमालय की गुफा में से आकर कहता होता तो आप प्रमाणित किस तरह कर सकते बच्चों ? परंतु मेरे जीवन में तो आपको प्रमाण मिल सके ऐसा है । उसके उपरांत इतने सारे रोग हैं, किसी भी डोक्टर को भी पूछ सकते हो कि इतने रोगवाला व्यक्ति इतना सारा काम करता है, वह कितनी बड़ी बात है ?

• भावप्रधान विषयों पर शास्त्र •

परंतु उसके अतिरिक्त मुख्य बात तो यही है कि मुझे किसी ने कहा कि, ''**मोटा,** आप जिज्ञासा पर लिखो ।'' जिज्ञासा

पर । क्या है कि इतना बड़ा विशाल संस्कृत का साहित्य, परंतु इसमें कुछ भी इस पर नहीं मिलता है । यह हमारी हिन्दुस्तान की किसी भाषा में जिज्ञासा पर शास्त्र नहीं मिलता है । तो उस पर शास्त्र लिखा । साहब, 'जिज्ञासा' उसी तरह 'श्रद्धा', 'भाव', 'निमित्त', 'रागद्वेष', 'कृपा', 'कर्म-उपासना' और अभी 'सद्गुरु' भी पूरा हो गया । यह काँटावाला साहब को लिखवाता था, बहुत बीमार था, भयंकर दर्द होता था, उस समय लिखवाया है और आज भी दर्द होता है तब लिखवाया ।

अभी मैं 'स्वार्थ' पर लिख रहा हूँ । एक व्यक्ति ने मुझे 'स्वार्थ' पर लिखने को कहा । मुझे ऐसा हुआ कि साला 'स्वार्थ' पर क्या लिखना ? स्वार्थ तो दिखता ही है । मैंने उनको ऐसा तो कहा, ''साहब, स्वार्थ पर तो नहीं लिखा जाएगा । उसमें क्या लिखना है ?'' फिर मुझे ऐसा हुआ, साला, तुच्छ से तुच्छ जो हो, उस पर शास्त्र लिखें तभी हम सच्चे । गुरुमहाराज ने कहा, ''भाई, तब हम सच्चे भई । लिखो बेटा ।'' तो ''स्वार्थ'' पर लिखना शुरू किया है । चारसौ पच्चीस के ऊपर पंक्तियाँ हो गई हैं । ''आप लिखो, हम पुस्तकें बेच देंगे ।'' तभी मैं लिखूँगा वैसे तो मैं लिखने का लिखता नहीं हूँ और उसी तरह लोग मुझे मदद करते हैं । यह मेरे शरीर के कष्टमय दिन भगवान के भजन ललकारने में बितते हैं, वह मेरे लिए भगवान की उत्तम समर्पणांजलि है । इसलिए किसी का दिल हो तो कहना भाई ।

• दीक्षा-विधि •

अब यह दीक्षा दिन जब गुरुमहाराज ने तय किया था, तब साहब, समय देखिये वसंतपंचमी थी । वसंतपंचमी आज तो नहीं है, परंतु रविवार है । बाहर से गाँव के लोगों को आने में सरलता रहे, इसलिए यह रविवार का दिन रखा है । परंतु उस दिन वसंतपंचमी में सब विकसित होता है । पेड़, पुष्प इत्यादि, कुदरत के सौंदर्य की बहार खिलती है । उस तरह हमारे जीवन में भी ऐसी वसंतपंचमी खिल उठे । यह गुरुमहाराज का एक symbolic action था ।

मुझे ऐसे बिठाया कि तू अब ऐसे बैठकर विचारशून्य हो जा । मैंने तो कहा, ''साहब, नहीं हो रहा ।'' ''क्या कहता है, अबे तब ?'' मैंने कहा, ''साहब, नहीं हो सकता । मुझे तो कई विचार आ रहे हैं ।'' ''कि उनको सिर पर रखकर मेरी मूर्ति सामने रख ।'' मैंने कहा, ''मूर्ति आपकी रहती है, परंतु विचार तो अभी आ रहे हैं ।'' तो कहने लगे, ''मेरी मूर्ति रहती है और तुझे विचार आते हैं तो मेरी मूर्ति में तुझे अभी प्रेम नहीं है ।'' मैंने कहा, ''साहब, एकदम तो कैसे प्रेम हो जाय ? पलभर में कुछ ऐसा प्रेम नहीं हो जाता । हम मिलते-जुलते रहे, साथ में रहें तो कुछ हो सकता है, तो कुछ आपमें मन रह सकता है । एकदम तो नहीं रह सकता ।'' बाद में तो कहा, ''फिर से कर । मेरी मूर्ति मन में रखकर आँखे बंद कर और मूर्ति को सामने रख और फिर सब विचार आना बंद हो जाय वह देख ।''

फिर से किया, मुझे तो विचार आते ही रहे। मैंने कहा, ''साहब, विचार तो बहुत आते हैं, और ज्यादा आते हैं।'' तीसरी बार करवाया। साहब, वह हुआ नहीं। उनके मन में कुछ संकल्प होगा, वे भावना रखते होंगे, बनता होगा, परंतु मेरा दिमाग स्वीकार नहीं कर सकता था। मुझे तो जो हुआ वह मैंने तो कहा। परंतु उनको चिढ़ चढ़ी होगी या कुछ और होगा या पहले से खोज रखा होगा या प्लानींग होगा, उसकी पूरी योजना होगी मुझे पता नहीं है। बड़ा खूंटा, इतना बड़ा, आगे इतना बड़ा उसका डट्टा, बड़े लोहे के खूंट आते हैं न साहब, छ, सात, आठ इंच के और आगे लोहे का डट्टा। एक डट्टा यहाँ इतने जोर से मारा साहब कि और इतना सब जोर से मारा शरीर बेहोश हो गया था और मैं जो पद्मासन लगाकर बैठा था, उसी स्थिति में तीन दिन गुजर गये थे।

फिर जब होश आया तब मुझे मसाज करते थे वे। पाँव पर और सब जगह। ''अबे लड़के, अब विचार आते थे ?'' मैंने कहा, ''नहीं विचार-बिचार कुछ नहीं साहब। यह तो आपने मुझे यहाँ मारा और सब खत्म हो गया मुझे। बिलकुल विचार नहीं।'' तब पूछा, ''क्या थी तुम्हारी स्थिति ?'' ''किसी भी प्रकार के विचार ही नहीं, ऐसी कोई स्थिति थी।'' और मुझे पूछा, ''कितने बजे ? कितने घंटे ऐसा रहा ?'' मैंने कहा, ''रहा होगा पा घंटा, बीस मिनट।'' क्योंकि मुझे तो यही ख्याल पा घंटा और कि पा घंटा-बीस मिनट। नहीं।'' मैंने कहा, ''कितना एक घंटा ? आधा घंटा ?'' ''अरे क्या

आधा घंटा !'' तो कि नहीं । फिर उन्होंने कहा, ''तीन घंटे, तीन दिन हो गये ।'' ''अरे !'' मैंने कहा, ''क्या बात करते हो, साहब ? अब मेरा कामकाज गया ।'' ''मैंने बिगाड़ा और यह क्या साहब ?'' भारी । यह आप क्या करते हो मुझे ? साहब, हमें कर्म की वफादारी तब बहुत थी । गांधीजी के साथ रहे थे इसलिए । सच कहता हूँ मुझे बहुत आघात भी लगा था । सच कहता हूँ । नहीं लगना चाहिए । यह बहुत बड़े से बड़ा अनुभव हुआ था । फिर मैंने कहा, ''यह कर्म ! यह सब, साहब बहुत भयंकर भूल मैंने कर दी । हालांकि मैंने लिख दिया था । ठक्करबापा को कि इस तरह हुआ था और तीन दिन मैं बेहोश अवस्था में रहा था, मेरे काम पर नहीं जा सका था । मुझे माफ करना और मेरी छुट्टी मानना, परंतु ऐसी दशा हुई थी ।

• *मोटा* की भजन-भक्ति •

उसके बाद उसने मुझे सभी साधन बतायें । उसने मुझे साधन बतायें, ''बेटा, देख, तुझे भगवान का स्मरण करते रहना है । प्रार्थना करना । भजन-कीर्तन गाना । और तुम्हें सभी शर्म-संकोच छोड़ देना । रास्ते में जाते-जाते भी भजन गाना ।'' नड़ियाद में मेरी समकक्ष वय के जो लोग हैं, आज भी जानते होंगे और मैंने भजन गाये..... बहुत से .... नड़ियाद में भजन गाते-गाते ही घूमता था । यह मेरे शरीर की ज्ञातिवाले मेरे नरसिंहकाका यहाँ पधारे हैं । मेरी ज्ञाति में बहुत प्रतिष्ठावाले ।

बहुत प्रतिष्ठावाले, वहाँ उनके पिता थे, वे जानते थे । मैं भजन गाते-गाते जाता, परंतु हमारी ज्ञाति में उनके अकेले का ही मुझे सहकार था । सहानुभूति थी, क्योंकि वे सत्संगी आदमी थे । आज भी कोई ऐसे व्यक्ति मिले तो उन्हें मालूम है कि यह **मोटा** है, जो घूमते फिरते भगवान का भजन गाते हैं । काकरखाड़ के रास्ते जाते समय हमेशा भजन गाते जाते समय कोई लड़के मेरे पर धूल डालते थे, वहाँ एक मगन राजा थे, रावजीकाका, जानते हो न ? उस मगन राजा ने दो-चार बार लड़कों को मार कर भगा दिये थे और कहा था, ''यदि अब इस लड़के पर तुमने धूल डाली तो तुम्हारा क्या हाल करूँगा यह समझ लेना ।'' वहाँ उनका बहुत ड़र था । रावजीकाका, मगनकाका का । वे नहीं होते और हमारा केस, साहब रेलवे की पटरी का । जिसमें वे बेचारे बरबाद हो गये । ऐसे लोग मुझे मदद भी करते थे, बचाते भी थे । लड़के परेशान भी करते, परंतु मैं भजन गाने में ही मस्त रहता ।

तो उसने मुझे बताया कि, ''लड़के, तुम अभय, नम्रता, मौन और एकांत का पालन करना । यह भगवान का स्मरण अखंड करना । प्रार्थना करना । आत्मनिवेदन करना । सम्मुखता और समर्पण करते रहना । सब कुछ वृत्तिओं का, विचारों का, स्थूल कर्म का, संसार का, व्यवहार का । यह भी यह सब मैं करते रहता । अभय और नम्रता, अंतर्मुखता बढ़ाते हैं । जिसे यह साधन करना हो, वो कर सकता है साहब और वैसे सिर पर हाथ रखे और मिल जाय, आशीर्वाद से मिल जाय, ऐसी

बात नहीं है। मैं तो मना करता हूँ, मेरा संग जिसे करना हो, वह करे। नहीं करना हो तो मुझे एतराज नहीं है। स्वयं पसीना बहाये बिना, यह ज्ञान नहीं मिल सकता। साले, तुम्हारी रोटी पाने के लिए आठ घंटे मेहनत करते हो तुम। **अपने स्वार्थ की रोटी पाने के लिए आठ घंटे मेहनत करते हो, तो भगवान के पास से तुम्हें लक्ष्मी प्राप्त करनी है, वह खेल में नहीं मिलेगी, साहब !**

गलत बात है। जो कोई कहता हो, उसके पास जाओ और कोई कहेगा तो यह गलत बात है। स्वयं द्वारा मेहनत किये बिना, पलपल की awareness (जागृति), एक पल बाकी नहीं। पलपल की अखंडता उसकी, उसकी सभानता पलपल की जागे, तब ही ज्ञान प्राप्त होता है। ऐसे-वैसे नहीं होता। स्वयं को ही प्रयत्न करना पड़ेगा। तो कि यह सद्गुरु के आशीर्वाद काम में आये सही। परंतु सद्गुरु में कहाँ ओतप्रोत हुए हो, कहाँ दिल से मिले हो ? यह मैंने बहुरूपिया का वेश लिया है। **देखता हूँ कितने ही लोग खंडन करते हैं। अरे साहब, मेरा खून कर डालते हैं। कई लोग ऐसा नकारात्मक सोचते हैं कि जिसका कोई मतलब ही नहीं होता। अबे भाई, क्या मैं आपके घर पर चावल रखने आया था ? कुमकुमवाले चावल रखने तुम्हारे (वहाँ) आया नहीं मैं। मुझे स्वीकार किया है आपने अपने आप और फिर मेरे साले, आपको शर्म नहीं आती ? आप अपने स्वयं के लिए वफादार नहीं हैं। मैं तो ऐसा कहता हूँ। जाहिर में कहता हूँ। परंतु अनेक**

लोग ऐसा करते हैं, फिर भी मैं तो प्रेम ही रखता हूँ । क्योंकि मेरी शपथ है, मेरा वचन है– प्रेम करने का ही । परंतु वह भगवान कहाँ देखता है, साहब ?

• कर्म का तत्त्वज्ञान •

साहब, जैन लोग कर्म पर बहुत, कर्म के सिद्धांत पर वे लोग बहुत.... और इतने सारे पृथक्करण में गहरे उतरे हैं । जैन धर्म वह ..... ऐसा दूसरा कोई धर्म इतनी गहराई में नहीं गया है, पृथक्करण के बारे में । वृत्तियाँ, उनके विभाग, उनके विभागों में । किन्तु उनके एक नानचंद्रजी मुनि करके बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं । यहाँ कोई जैन होंगे तो उनको पहचानते होंगे । वे ज्ञानी भी थे और कवि भी थे । साक्षर भी थे । प्रार्थना के बहुत परम भक्त और सभी धर्मो की तरफ समभाववाले । इससे कई बार सत्संग होता था ।

वे कर्म की philosophy पर कहते थे । मैंने कहा, ''कर्म में तो मैं मानता हूँ । कर्म का परिणाम भी है । परंतु यदि सिर्फ अकेले कर्म का ही शुद्ध न्याय होता तो एक पल भी हम जी नहीं सकते । साहब, आप विचार करना । इस जीवन में हमने कितने ही ऐसे कुकर्म, अन्याय भगवान को नापसंद ऐसे किये होते हैं । हमारे इस जीवन में इतना हमारा वर्तमान जीवन है, उसमें भी और उसके बाद के जीवन में तो कितने ही कर्म किये होंगे । उन कर्म का यदि शुद्ध न्याय मिले तो एक पल भर भी हम जीने के लायक नहीं हैं । परंतु साथ में एक करुणा है ।

करुणा वह आत्मा का गुणधर्म है । यह भगवान की करुणा है साथ में साहब । मैं मुनि महाराज के चरणस्पर्श करके कहता, ''साहब, आप इस बारे में विचार करो । आपके वहाँ कोई व्यक्ति आपका शिष्य हो । भूल करता है तो आप क्या करते हो, ज्यादा से ज्यादा ? आप उसकी गलती को माफ करते हो या नहीं ? वैसे तो सचमुच सच्चा ज्ञानी पुरुष होगा तो उससे ज्यादा प्रेम करेगा, उसे छोड़ नहीं देगा । भगवान किसी को छोड़ नहीं देता । भगवान किसी के पाप-पुण्य को नहीं देखता है और देखा हो तो पापियों का उद्धार हो गया है– ऐसे बड़े-बड़े भक्त हो गये हैं, इतिहास में उनका नाम है, प्रसिद्ध हो गये हैं ।

• *मोटा* का काम–सब को प्रेम करना •

ऐसे मेरा भी धर्म यही है कि सब को प्रेम करना । कई लोग कहते हैं, ''**मोटा**, फलाना व्यक्ति आपके आश्रम में आता है ।'' मैंने कहा, ''तुम्हें क्या हो गया भाई ?, भले आता ।'' मेरा काम तो जो सब आए, वे भले आए । मेरा काम तो प्रेम करना है । मैं कुछ किसी का दुष्कर्म नहीं देखता । पाप-पुण्य देखना मेरा काम नहीं हैं । मेरा काम प्रेम करना है । तो मैं प्रेम करता रहता हूँ । परिणाम की भी मेरी इच्छा नहीं है । हमें तो गीतामाता सामने पुकार कर कहती हैं । अबे, बेटे, परिणाम की चिंता मत करना, परंतु सब मेरे बेटे सभी परिणाम ही पहले रखते हैं । तो यह नहीं चल सकता । **आप सब भगवान की बातें करते हो । भगवान के पथ पर**

चलने की बात करते हो और फल की अपेक्षा साथ रखो, वह नहीं चल सकता ।

• श्रीबालयोगी की आज्ञा के अनुसार साधना •

तब यह गुरुमहाराज ने मुझे इस तरह दीक्षा दी कि भगवान का स्मरण करना, अखंड करना और साहब, उसके लिए प्रयत्न भी किया । उसका प्लानींग मैंने किया था कि रोज ढाई घंटे लेना । जिस दिन न हो, भोजन नहीं करना और प्रत्येक पाँच-पंद्रह दिन में दस-दस मिनट बढ़ाते जाना । इस तरह प्रयत्न किया, साहब । चौदह-पंद्रह घंटे तक तो ले गया था । फिर आगे बढ़े ही नहीं, परंतु भगवान ने साँप कटवाया और मुझे अखंड स्मरण करवाया ।

तब स्मरण, प्रार्थना, भजन-कीर्तन, आत्म-निवेदन, समर्पण, सम्मुखता । क्योंकि भगवान को तो आकार नहीं है, स्वरूप नहीं हैं तो किसका स्वरूप सामने रखें ? मन को स्थिर करने के लिए स्वरूप की बहुत जरूरत । कि मन निराकार को नहीं पकड़ सकता । गीताजी के बारहवें अध्याय में कहते हैं, ''जगत में जाने-अनजाने सभी साकार का स्तवन करते हैं ।'' साकार को ही मन पकड़ सके ऐसी शक्यतावाला है । इसलिए मैं मेरे सद्‌गुरु महाराज को सम्मुख रखता था । परंतु सद्‌गुरु का शरीर वह सद्‌गुरु नहीं है । वहाँ मैंने सद्‌गुरु पर लिखा है, उसमें बहुत सारा उस बारे में लिखा है । **उसमें रहा हुआ चेतन जो है,**

वही हमारा असली धर्म है, वही हमारा आदर्श है, उसके प्रति जाना ।

तब ये सब साधन साथ-साथ करता था । अभय, नम्रता, मौन और एकांत । किसी भी दिन घर में सोया नहीं हूँ । शरीर में चाहे कितना ही बुखार हो, बीमार हो । अभी भी जिसे पूछना हो तो पूछ लेना, फिर कोई साक्षी मिलेगा नहीं । गांधी आश्रम में मेरे विधवा भाभी हैं अभी । मेरे से चार साल बड़े । अभी उन्हें पूछ सकते हो । जिसे पूछना हो उसे । घर में सोया नहीं । चाहे जैसी भयंकर से भयंकर जगह के बारे में सूनुँ, वहाँ जाकर सोता । अभय विकसित होता है । साहब वैसे ही अभय विकसित नहीं होता है । स्वयं द्वारा की गई बात है । वह तो सामना करना पड़ता है । सामने जाना पड़ता है । ऐसी स्थिति में आ जाना पड़ेगा । तब ये गुरुमहाराज ने दीक्षा दी । इस तरह बरतने को कहा । उनके कहे अनुसार वर्तन किया ।

• दान, परमार्थ की समझ •

और मेरी तो सब से प्रार्थना है कि संसार में हैं । हमें गृहस्थाश्रम चलाना है । **स्वार्थ तो करना ही पड़ेगा भाई, उसमें आपका कुछ भी नहीं चलेगा । परंतु साथ-साथ परमार्थ भी करते रहो ।**

ये दो पलड़े हैं— द्वन्द्व । स्वार्थ और परमार्थ । तो अकेले स्वार्थ में रचेपचे रहेंगे तो नहीं चलेगा, साहब । आज लोग दान

करते हैं सही, परंतु दान को आज मैं दान नहीं कहता, व्यवहार हो गया है। कि फलाना ने इतने दिये, इसने इतने दिये हैं। इससे इतने रखो भाई हम तो। अब दान की प्रथा भी व्यवहार हो गई है। उसके पीछे ज्ञान नहीं है। कोई सभानता नहीं है। उच्च आदर्श, उच्च भावना, हमारा धर्म है और हमें करना ही चाहिए। उस प्रकार की सभानता के बिना हुआ काम वह काम नहीं है। उससे जीवन में उत्कर्ष नहीं होगा। **लीक अनुसार किया हुआ कोई भी कर्म वर्तमान जीवन में भावना का विकास प्रकट नहीं कर सकता है।** तब मेरी तो प्रार्थना है, भाई, कि स्वार्थ तो हमारे सिर पर पड़ा ही है और वह हमें करना ही पड़ेगा, परंतु परमार्थ करते रहो।

परमार्थ यानी सिर्फ आप आध्यात्मिक वाचन करो, उसे मैं परमार्थ नहीं कहता हूँ, साहब। उसे तो छोड़ो, मैं ऐसा कहता हूँ। वह एक बाधा है। उसके पीछे कई लोग लगे हुए हैं। इससे तो समाज का भला होता हो, ऐसा कोई प्रत्यक्ष अच्छा काम करो। तो क्या भला होता होगा ? वह सूझेगा, करने की दानत जागृत होगी, तब अपने आप सूझेगा। **परमार्थ के बिना हमारे समाज का उत्कर्ष नहीं होगा।** यह भावना भी जागृत नहीं होगी। हमारा समाज स्वराज मिला है, परंतु स्वराज की लायकी हमारे समाज में अभी जन्मी नहीं है, साहब।

और ये सब रागद्वेष साहब। ये सारे झगड़े इतने बढ़ गये हैं। ये कोंग्रेसवाले भी अंदर ही अंदर अलग-अलग पक्ष बनाते

हैं। जिससे पूरे समाज को परेशानी होती है। वे सत्याग्रह भले कराए, हम मना नहीं करते हैं भाई। परंतु उसमें बेचारे निर्दोष मारे जाते हैं। और गांधीजी थे एक। परंतु साथ-साथ वे समाज की भावना भी जागृत करते थे, भाई। हालांकि उन्होंने समाज के सर फुडवाये, लाठियाँ भी खानी पड़ी, लोग मर भी गये, कई जेलों में गये। परंतु उस समय भावना का जो प्रपात उछलता था, जो कोई उस समय के दिनों को जो कोई याद करेगा, उसे मेरी बात सच लगेगी। उस भावना का प्रपात जो उस समय उछल रहा था, वह आज नहीं है। उस भावना की भूमिका में गांधीजी ने यह सब कराया है।

• विरोधियों के प्रति गांधीजी का व्यवहार •

गांधीजी, गांधीजी इतने रागद्वेष से मुक्त थे कि उनके कट्टर विरोधियों के साथ भी प्रेम करते थे, साहब। अनुभव की यह सच्ची हकीकत है। एनी बेसन्ट थे। स्वयं वह भी देशभक्त। उसके लिए गांधीजी ने सरकार ने उनको पकड़ा, तब गांधीजी ने उनको छुड़ाने के लिए तैयारी की थी। परंतु non-cooperation असहकार का आंदोलन शुरू किया, तब रोज मद्रास (चेन्नई) से अखबार निकालते थे, उसमें गांधीजी के विरुद्ध इतना सारा छपता था। परंतु गांधीजी वह अवश्य पढ़ते थे। कई लोग कहते थे, "अरे! बापु, आप यह क्यों पढ़ते हो?" तो वे कहते, "यह भी पढ़ना चाहिए। और यदि प्रसंग आए तो हमारे विरुद्ध के व्यक्तियों

से भी मिलना चाहिए।'' और जिन जिन लोगों ने उनके विरुद्ध लिखा है, उनको भी प्रसंग आने पर, गांधीजी मिले बिना नहीं रहे हैं। ऐसे उनके जीवन में कई प्रसंग हैं। **हमारे गांधीजी के आश्रम में भी कितने सारे विरोधी। कोई कहे इनको इतना समय क्यों देते हो ? तो उसे ज्यादा समय देते। गांधीजी के जो विरोधी थे, वे यदि गांधीजी के पास आते तो उन्हें ज्यादा समय देते।** इस तरह उन्होंने जीवन में प्रत्यक्ष करके दिखाया है। उन्होंने विरोधियों के प्रति रागद्वेष से मुक्त ऐसा सद्‌भाव दिखाया है। ऐसी स्थिति में वे प्रजा को असहकार करवाते थे।

आज.... आज ऐसे व्यक्ति मिलने दुर्लभ हैं। होंगे, नहीं हो। भाई, इतनी बड़ी पृथ्वी है। उसमें भी कई रत्न पड़े हैं। होंगे। कोई नहीं होगा, ऐसा मेरा कहना नहीं है। परंतु आज वह वातावरण नहीं है। उस भाव की भूमिका का प्रपात जैसा भाव उस समय उछलता था, तब ऐसा और वह भाव उछलता था, जिससे हजारों युवा लड़के-लड़कियों ने सभी ने त्याग किया है। अपने सर तुड़वाये हैं और उस समय समाज ने पुलिस के भयंकर अत्याचारों का सामना भी किया है। उस भावना के प्रपात के कारण और उस स्थिति में, उस भूमिका में गांधीजी ने यह सत्याग्रह चलाया है। आज वह भूमिका नहीं है। फिर भी सत्याग्रह होते रहते हैं। उसमें बेचारे व्यर्थ निर्दोष लोग और समाज को बहुत परेशानी भोगनी

पड़ती है । परंतु समाज को उसका भान नहीं हैं । भेड़चाल में सब उछलते हैं, उछलने दो । मैं तो कहता हूँ होने दो । परंतु मेरी अंतिम एक ही प्रार्थना है भाई । स्वार्थ तो आपको करना ही पड़ेगा । आप बच नहीं सकते, परंतु साथ-साथ परमार्थ करना ।

आपको पैसे मिले हैं, वे आपके बाप के नहीं हैं । मैं ऐसा जाहिर में कहता हूँ । आप समाज के पास से कमाते हो । यह समाजवाद का धर्म है, इसलिए मैं नहीं कहता हूँ साहब । मैं तो धर्म का व्यक्ति होकर कहता हूँ । **धर्म का व्यक्ति वही, जिसका स्वार्थ कम हो गया हो । त्याग और परमार्थ जिसके जीवन में आगे हो, वही धर्म का पालन करता है, ऐसा समझना । ये लक्षण । उसके बिना धर्म नहीं, साहब । चाहे वह मंदिर जाता हो और तिलक लगाता हो, और रोज दो घंटे सेवा करता हो, परंतु यदि उसके जीवन में त्याग और परमार्थ अग्रभाग में नहीं है, त्याग, तप और परमार्थ उसके जीवन में नहीं है तो वह धर्म का भी पालन नहीं करता है ।**

तो हमारे समाज को स्वराज मिला है, उसे उन्नत होने के लिए इसकी जरूरत है । भजन-कीर्तन पूरी रात किया करे, उन सब की जरूरत नहीं है । यह न करें ऐसा मेरा कहना नहीं है, **परंतु उससे यदि आपके जीवन में गुण, भाव और शक्ति प्रगट न हुए तो उसका क्या अर्थ है, भाई ? साले भांग**

पीते हो तो आपको पता लगता है । काम, क्रोध जागृत हो, वासना जागृत हो तो भी मालूम पड़ता है, तो आप भजन करते रहो और नामर्द रहो यह कभी हो सकता है, भाई ? परंतु किसे यह सब समझना है ? अंत में मेरी एक ही प्रार्थना है कि भाई आप स्वार्थ करते रहो, परंतु परमार्थ करते रहना ।

• समय का अभिज्ञान •

साहब, समय बहुत विपरीत आ रहा है । मैं कुछ भड़काने का काम मेरा काम नहीं है । परंतु सच बात कहता हूँ । मैं १९४४ के वर्ष में एक राजा के वहाँ भोजन करने गया था । मेरा मित्र वजुभाई जानी उपस्थित था । मैंने कहा, ''साहब, आपका यह राज्य चला जानेवाला है ।'' ''अरे ! **मोटा** क्या कहा ! आप क्या बात करते हो ! भांग पी है क्या ?'' (मैंने) कहा, ''साहब, भांग नहीं पी है, मैं समय के अभिज्ञान की बात कहता हूँ कि यह आपका राज्य जानेवाला है ।'' तो गये । उसी तरह आज भी कहता हूँ कि यह.... ये पैसे जायेंगे भाई । हमारे देश की स्थिति सलामत रहनेवाली नहीं है । अराजकता होनेवाली है । यह जो निशानी मुझे दिख रही है, वह मैं मेरे स्वजनों को, समाज को बताकर उन्हें चेतावनी नहीं दूँ तो वह बराबर नहीं । इसलिए वह समय आनेवाला है । तो तो फिर परमार्थ करो भाई ।

• *मोटा*–कुशल अर्थशास्त्री •

आपसे जितने संभाले जा सकते हैं, उस तरह पैसे संभालो। और पैसे भी चीजवस्तु में रोकना। दिन प्रतिदिन पैसे का अवमूल्यांकन होता जा रहा है। रुपये का Depreciation होता है। यह आज से नहीं कहता हूँ। यह हमारे डाक्टर काले कोटवाले हाजिर हैं, पूछो। उनके वहाँ था, तब से कहता हूँ। अबे ! पैसे तुम्हारे चीजवस्तु में लगाओ। नानाभाई डाक्टर हैं ? बीच में एक स्वजन ने कहा, ''वहाँ खड़े हैं।''

साहब, कहा था या नहीं ? सच बात ? वर्ना तो ये लोग कहेंगे कि बैठे-बैठे **मोटा** तो भांग पीकर गप हांकते हैं। तुम्हारे पैसे हो तो चीज-वस्तु में लगाना। वह appreciation होगा और नगद पैसे रखोगे, उसकी सलामती नहीं है, इस राज में।

मैं तो आपको आज भी कहता हूँ कि हमारे देश में इस पैसे का अवमूल्यांकन आज नहीं तो कल होनेवाला है। कब होगा यह नहीं कहता हूँ। परंतु इतना मुद्राविस्तार होता जा रहा है और उससे रुपये का मूल्य कम किए बिना चलेगा नहीं। सौ के पचास हो जाएँगे। कभी भी किसी वस्तु में आपने लगाये होंगे तो आदमी बच सकेगा। और यह महँगाई है वह बेवजह है। सच बात तो साहब यह है। मैं कुछ अर्थशास्त्र का सीखा हूँ। सिर्फ भगत मात्र नहीं हूँ साहब। मैंने सभी विषयों का अभ्यास किया है। इस मुद्राविस्तार के कारण इतने ज्यादा दाम बढ़ते हैं।

यदि मैं सरकार में होता तो प्रजा को confidence विश्वास में लेकर कहता कि भाई यह हमारी मुद्राविस्तार की नीति के कारण दाम बढ़ते हैं । ये लोग– अनेक लोग हमें अलग-अलग कारण देते हैं । **परंतु यह मुद्राविस्तार तो बढ़ता ही जाता है । हरी नोट छापते ही रहते हैं । तो इसका अंत किस तरह आएगा ? किसी भी दिन उसे इस रुपये का अवमूल्यांकन करना ही पड़ेगा । तब आपके रुपये यदि किसी चीज-वस्तु में लगे होंगे तो ही..... सकेंगे । स्वार्थ के लिए भी आप इतना तो करना । और मेरी सलाह माननेवाले कई लोगों को फायदा हुआ है, परंतु फायदा हो या ना हो, उसके लिए मैं नहीं कहता हूँ, परंतु मैं तो जो परिस्थिति होनेवाली है, उसे सामने देखकर कहता हूँ कि भाई, ऐसा समय आनेवाला है । सही सुरक्षितता रहेगी नहीं हमारी ।**

और यह समाज । ये तो गरीबों की बात करते हैं । वे भले करे । पर यह बात गलत नहीं है । जिस तरह हम परिवार में कोई बीमार हो तो उसकी ज्यादा संभाल करते हैं, डॉक्टर को बुलाते हैं, उसकी सेवा करते हैं । उसी तरह हमारा एक समाजरूपी अंग है, उसमें जो गरीब लोग हैं, उनकी हमने, समाज ने उपेक्षा की है । यह बात बिलकुल सही है । वे ऊपर आए, उनको काम-धंधा मिले, रोजगार मिले, खाना मिले ।

वह समाज को आज नहीं तो कल करना ही पड़ेगा । छुटकारा नहीं है । वह फिर इन्दिराबहन कहते हों या XYZ कहते हों, यह बात सच है, फिर वह राजकीय हेतु के लिए कहते हों तो वे जाने, परंतु हमारे धर्म की दृष्टि से तो यह बात सच है ।

धर्म तो वहाँ कहता है कि, **''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा''** कि त्याग त्यागकर भोग करो । आप अपने स्वयं के बारे में सोचो, थर्मोमिटर रखकर विचार करो कि कितना त्याग त्यागकर खाते हो ? अरे ! हम तो कहते हैं कि निरा भोग ही भोगतें हैं । हम गृहस्थाश्रमी आदमी । और लक्ष्मी को तो हमारे शास्त्र ने चंचल कहा है । पलभर में चली जाएगी साहब । बड़े-बड़े के राज्य गयें । हमारे दक्षिण में हजार-हजार, दो-दो हजार एकरवाले जमीनदार थे साहब । आज उनको घर का फर्निचर बेचना पड़ता है । अब वे सब जाजम बेचते हैं । हमने स्वयं ने देखा है ।

• जिसका नमक खाया, उसे सावधान करने का फर्ज •

.....बात नहीं करता कि इस उदाहरण से आप सावधान हो जाओ तो अच्छा । हमारे यहाँ भी ऊपरी मर्यादा आई है । किसानों को तो आई है । अब योग्य-अयोग्य उसकी बात आप सब समझो । परंतु यह आनेवाले समय की निशानी दिखाता है । शहरों में भी धनवानों के लिए मर्यादा मकानों और धन की भी आएगी ही । और किस तरह ये पैसे ले लेना । आप

पूरी नीति को देखे तो किस तरह आपके पैसे ले लेना उसी बाबत की नीति है ।

मैं कुछ सरकार के सामने आरोप नहीं रख रहा हूँ । जो हकीकत है, उसे कह रहा हूँ । इससे आपको सावधान होना हो तो हो जाईए । तो यह दे देने पड़ते हैं । अबे ! यह परमार्थ तो करो । अबे, मेरी सास के ये तुम तो कैसे लोग हो ? पर ऐसे के ऐसे नहीं करेंगे साहब । नहीं करेंगे तो भगवान..... मुझे तो मेरा भगवान हजार हाथवाला, जो-जो काम लेता हूँ, वह मदद करता है । परंतु मेरा धर्म है । आपका नमक मेरे पेट में है, समाज का । इसलिए मुझे जो महसूस होता है, वह सच्ची हकीकत न कहूँ तो मैं बेवफा सिद्ध होऊँगा । इसलिए कहता हूँ, फिर से मेरी प्रार्थना है कि भाई, स्वार्थ तो साथ में है ही, परंतु परमार्थ भी करते रहना । हरिः ॐ..... तत् सत् ।

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [२]

गुरुपूर्णिमा उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन वाणी के अंश

(दि. ४-७-१९७४ तिरुचिरापल्ली)

: अनुवाद :

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

॥ हरिः ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. आध्यात्मिक बातों का यह काल नहीं है ५७
२. काल के अनुसार बात ५८
३. काल को समझो ५९
४. विपरीत काल में भाईचारा विकसित करें ६०
५. रिश्वतखोर अमलदारी तंत्र ६०
६. बढ़ते दाम का विषचक्र ६३
७. साम्यवाद की निशानी ६५
८. बहनें गहनें का ठाट-बाट न करें ६६
९. **मोटा** को भेंट मिले हुए गहनों का उपयोग परमार्थ में ६८
१०. **मोटा** की आगाही : खून के संबंधियों तो
भाईचारा विकसित करो– शव में से शब्द–हरि-स्मरण ७०
११. वेदकाल का साहित्य सब से पुराना है ७२
१२. हठयोग की उत्पत्ति ७४
१३. आयुर्वेद की उत्पत्ति ७५
१४. गुरूपूर्णिमा की उत्पत्ति ७७
१५. मंदिरों की उत्पत्ति का कारण और वर्तमान में
मंदिरो के प्रति सरकारी अभिगम ८०
१६. दिल के भाव से गुरु करो और
काल के अनुसार की सिखावन ८०
१७. अहम् को फीका करने के लिए पैर पड़ने का रिवाज ८२
१८. स्वयं की शांति के लिए तो सद्भाव रखिए ८३
१९. सद्गुरु के पास खुले हो जाओ–
मोटा का कार्य समाज का कार्य है ८४
२०. धन का सदुपयोग करो ८५
२१. सच्ची भावना त्याग करवाती है ८५
२२. **मोटा** को कुटुंबी मानते हो तो भक्ति तो दिखाओ ८६
२३. मृत्यु तक भी गुरुआज्ञा का पालन ८७
२४. चेतनानिष्ठ के लक्षण : उदाहरण सहित ८८

• • •

॥ हरिः ॐ ॥

दि. ४-७-१९७४ तिरुचिरापल्ली में गुरुपूर्णिमा के उत्सव प्रसंग पर श्रीमोटा की पावन वाणी के अंश

• आध्यात्मिक बातों का यह काल नहीं है •

सद्‌गुरु पर तो एक पूरी पुस्तक लिखी है । अभी । प्रेस में छप रही है । काव्यों में लिखा है । अनुष्टुप में । और बहुत अच्छा है । मुझे लिखने से संतोष भी होता है । इतना ही नहीं, परंतु ऐसे पुस्तक लिखता हूँ, तब विद्वानों को इकट्ठा कर पढ़ाता हूँ कि जिससे उसमें कोई शास्त्र के विरुद्ध कुछ न हो । क्योंकि मैं तो शास्त्र पढ़ा नहीं हूँ । किसी भी दिन मैंने न तो शास्त्र पढ़े हैं या पृष्ठ भी खोला नहीं ।

यह सद्‌गुरु के अनेक पहलू, सद्‌गुरु कब हो सकते हैं । उनके लक्षण कौन कौन से ? उसके अनेक पहलू इस सद्‌गुरु में वर्णन किये हैं । और उस पर से कह सकता हूँ, परंतु यहाँ कहना व्यर्थ है, क्योंकि सब आध्यात्मिक बात करने में मुझे कोई अर्थ नहीं लगता है ।

जब सामान्य गुजरात में प्रवचन हो, तब इस आध्यात्मिक बात के बारे में बहुत कम बोलता हूँ ।

• काल के अनुसार बात •

पर एक बात मैं आपको कहता हूँ कि इस काल के बारे में बात कहूँ। कि यह घबराने या डर दिखाने के लिए नहीं कहता हूँ, किन्तु समय बहुत विपरीत आया है। काल अभी विपरीत आया है। उसके आपको चाहिए उतने उदाहरण मिल सके ऐसे हैं।

और यह काल इतना विपरीत आया है कि उससे भी ज्यादा खराब काल आनेवाला है और यह हकीकत रूप से कहता हूँ।

मैं तो कई समय से कहता हूँ कि हमारे देश में अराजकता आनेवाली है। तब उस तरफ हम सब यह गति सरकार की गति भी उस तरफ हो गई है। उसका एक ही उदाहरण लो। तो सरकार ने कानून बनाया है कि यह गेहूँ हम कब्जे में लें कि जिससे गरीब लोगों को मिले। सस्ते दाम से गेहूँ मिल सके। परंतु उसमें सरकार निष्फल गई है। वे गरीब लोगों के लिए करने गए, परंतु इससे गरीब लोगों को ही ज्यादा से ज्यादा दुःख है। क्योंकि उसे मजदूरी छोड़कर इस लाइन में खड़ा रहना पड़ता है, तब मुश्किल से दो किलो देते हैं। उसमें भी दो किलो पूरे नहीं मिलते हैं। परंतु दो किलो में उसका कैसे गुजारा होगा ? इसलिए दूसरे बाजार से लेते समय यह कानून नहीं होता तो उसे सस्ते में मिलते और समय भी नहीं गँवाना पड़ता। यह तो स्वयं की मजदूरी खो कर उसे बेचारे को फिर कतार में खड़ा रहना पड़ता है।

आप सब को उसका कुछ ख्याल नहीं आता । कि आपको कतार में खड़ा नहीं रहना पड़ता । परंतु ये गरीबों को ही ज्यादा से ज्यादा तकलीफ हुई है इससे । और यह अनुभव हुआ है तो भी वे कहते हैं कि यह शालिधान की फसल भी सरकार के द्वारा करेंगे । उसमें भी सफल नहीं होंगे । बिलकुल सफल होनेवाले नहीं हैं वे । क्योंकि हमारा administration इतना strong नहीं है, जितना रशिया में है । चीन में, चीन में तो मार ही डालते हैं उसे । वह नागरिक हो या कोई भी हो उसे । उसे कोई दहशत नहीं होती है ।

चीन में सोना है, वह किसी के पास मिले और बच्चों ने यह कह दिया, माँ-बाप नहीं हो और बच्चे कह देते कि हमारे यहाँ सोना है तो उसे मार ही डाले । ऐसा सख़्त जो administration हो तो ऐसी सब योजनायें सफल हो सकती हैं । यहाँ हमारे देश में यह है नहीं, संभव नहीं है ।

• काल को समझो •

परंतु यह तो उदाहरण इसलिए देता हूँ कि काल कैसा विपरीत आता है । आप आपके पैसों के सुख से सुखी और आनंद में हो, इसलिए आपको इसका भार भी लगता नहीं है । उसकी reality, उसकी वास्तविकता भी आप लोगों को बिलकुल लगती नहीं है । क्योंकि पैसे मिले रहते हैं और उसके कारण आप सुख-शांति में हो तो वह अच्छी बात है । इसमें मुझे भी

खुशी होती है। परंतु अभी तो सब के साथ सुख है। परंतु इस काल को आप समझो । मेरा कहना है । विनती करता हूँ ।

• विपरीत काल में भाईचारा विकसित करें •

अब आध्यात्मिक बात गुरुपूर्णिमा के बारे में कहूँ, उसका कोई अर्थ नहीं है । आप कोई कुछ भी उसमें से समझनेवाले हो या उस विषय का रहस्य समझनेवाले हो ऐसा मुझे बिलकुल लगता नहीं है और वह कहना व्यर्थ है । परंतु यह काल विपरीत आता है और आप सब यदि भाईचारा विकसित करोगे तो तुम सभी को। इस घर में कहता हूँ और सब जहाँ-जहाँ हैं, जिसके-जिसके यहाँ बैठे हैं, उन सभी को कहता हूँ कि भाईचारा विकसित करोगे तो उसमें से आपको जो दिल में आनंद होगा, शांति होगी, प्रसन्नता होगी और एकदूसरे का आपको आसरा और उष्मा रहेगी। यह बहुत बड़ा सुख है। पैसे से भी बड़ा सुख है। और जो आज धनवान । जिनके पास आज पैसे हैं, उसे यह बात समझ में नहीं आएगी। बिलकुल सच कहता हूँ। उनको बिलकुल समझ में नहीं आएगी ।

• रिश्वतखोर अमलदारी तंत्र •

तो यह ऐसा समय आ रहा है कि अब ज्यादा से ज्यादा रेईड (छापे) भी डाली जाएगी और कई जगह उसकी शुरूआत भी हो गई है। परंतु जो ज्यादा नहीं डाले जा रहे हैं, क्योंकि हम भी ऐसे हो गये हैं और अधिकारी भी ऐसे हो गये हैं कि

रिश्वतें देकर सब रुकवा सके ऐसा है। नहीं रुकवा सके ऐसा नहीं हैं। परंतु वह निश्चितरूप से जबरदस्त आगे नहीं बढ़ रहा है, क्योंकि सरकार जागृत है। यह सब करवाना है, परंतु administration इस बात में सहयोग कर सके वैसा नहीं है, सहकार दे सके वैसा नहीं है। परंतु फिर भी मुझे लगता है कि समय विपरीत है और हमारा व्यापार-धंधा बिखर जाए ऐसा सरकार का इरादा भी है।

हमारी अभी की सरकार वह communist minded है। पहले नहीं थी। जवाहरलाल नेहरु थे। उसे भी उसका leaning communism तरफ था। साम्यवाद तरफ था। परंतु वह बहुत चतुर आदमी था। कि हमें अमरिका के साथ अच्छे संबंध रखे बिना चलेगा नहीं। और यह अमरिका हमें मदद करे वैसा है। और जब चीन के साथ युद्ध हुआ, तब जवाहरलाल नेहरु ने निजी वायरलेस से कई राज्यों को संदेश भेजे थे। दुनिया के सभी राज्यों को संदेश भेजा था कि हमारे पर आफत आई है। अब आप हमें मदद करो। चीन को हमने ऐसा कोई कारण नहीं दिया है कि जिससे वह हम पर आक्रमण करे, फिर भी उसने हम पर बिना किसी कारण के हम पर आक्रमण कर दिया है तो आप हमारी मदद करो। तब रशिया ने मदद की, परंतु अमरिका ने तुरंत सैनिक कार्यवाही कर दी। उसने अपने जहाजी बेड़े के सैन्यों के साथ लश्करी मदद दी और उसने शस्त्र भी दिये। तब उसने खर्च की परवाह नहीं की थी। तो नेहरू ऐसे

सयाना व्यक्ति था । वह साम्यवाद के साथ मिला हुए होने पर भी उसने अमरिका के साथ अच्छा संबंध रखा ।

इस समय में हम रशिया के साथ संपूर्ण रूप से मिल गये हैं। अमरिका के साथ हमारी सरकार का सहकार नहीं है। कहते जरूर हैं कि हमें उनके साथ अच्छा व्यवहार करना है । सब अच्छा करना है । परंतु internally भीतर से वह नहीं है ।

मैं तो आज भी हिन्दुस्तान के एक नागरिक के रूप में इच्छा करता हूँ कि हमें दोनों राज्यों के साथ हमारा सहकार होना चाहिए । दोनों राज्यों में से कोई हमारा दुश्मन नहीं है । किसी के प्रति हमें नापसंदगी नहीं होनी चाहिए । ऐसी नीति हमारे देश के लिए कल्याणकारी है, परंतु आज वह नहीं है। हमारी सरकार आज communist minded है। साम्यवादी है। और एक-एक कदम उस तरफ बढ़ती जाती है। और इतना ही नहीं, परंतु यदि आप बारीकाई से देखेंगे तो इन धनवानों का धन कैसे बिखर जाय । उनके पैसे कैसे चले जाय ऐसे ही साम्यवादी कदम सरकार के हैं ।

आप यह देखो । बारीकाई से जाँचो । किस तरह उनके पैसे अभी तो उनकी शुरूआत ही है आज । तो यह आपकी एस्टेट ड्यटी, वेल्थ ड्युटी डेथ ड्युटी, एस्टेट ड्युटी में भी आप देखें तो पैसे देते देते आपकी एस्टेट ही कुछ सालों में खत्म हो जाय, इस तरह की पूरी पद्धति है ।

तो सरकार को हम सफल होने देते नहीं, यह अलग बात है । परंतु उनकी नीति तो उसी प्रकार की है और व्यापार-

धंधे भी अस्त-व्यस्त हो जाय उसी प्रकार की सरकार की पूरी नीति हैं । मध्यम वर्ग ही मारा जाता है । निकाल ही देते उसे सीधे सीधा ।

• बढ़ते दाम का विषचक्र •

ये व्यापारी लोग बहुत मुनाफा करते हैं, लोगों को चूसते हैं । परंतु हमारे से ज्यादा तो वे लोग जिन्होंने एक यह संस्था बनाई है, जिसमें सब कुछ विदेश से मंगवाना और फिर सब को बाँटना । वह सौ प्रतिशत नफा करती हैं । मैं तो जाहिर में कहता हूँ । हं...अ... साहब, आपको अकेले को नहीं कहता हूँ । जाहिर में कहने का मेरा अर्थ ये सहकारी मंडलियाँ इतना ज्यादा नफा करती है कि उसे कोई कुछ नहीं कहता ।

हमारे व्यापारी नफा करते हैं तो परमार्थ करते हैं । धर्मादा देते हैं । कई शिक्षा-संस्थाएँ चलाते हैं और ये व्यापारी लोग मदद भी करते हैं । वे दान भी देते हैं । परंतु यह सहकारी मंडली तो किसी को कुछ नहीं देती । तब यह सरकार की नीति ऐसी है कि have और have not जिसके पास है, उसे कैसे कम (और) उसे have not को कैसे ज्यादा मिले उस तरफ ज्यादा झुकाव दे तो अच्छा । परंतु वह गरीबी हटाने की बात करती है, लेकिन गरीबी नहीं हट सकी । उसके अनुसार कदम अभी के सचमुच प्रयत्न करती है सही सरकार । मेरा ऐसा कहना नहीं है कि प्रयत्न नहीं करती है, परंतु एक-एक कदम से एक-एक कदम से गरीबों को सहन करना पड़ता है । तब ऐसे सब तो यह तो धनवान लोगों को भी लागू होता है न ? **तो ये धनवान**

लोग क्या कुछ उनकी जेब में से देनेवाले हैं ? वे तो ग्राहक पर ही डालनेवाले हैं– तब फिर दाम में वृद्धि ही उससे होती रहेगी । और दाम बढ़ते हैं तो गरीब लोगों को ही खटकेगा । इसमें दूसरे किसी को ही ज्यादा से ज्यादा दुःख होगा । इसमें दूसरे किसी को ज्यादा से ज्यादा दुःख खटकेगा । सरकार भले ऐसे कर लगावे जो सिर्फ पैसेवालों को ही असर करे, जैसे पेट्रोल का कर बढ़ाया । यह धनवान लोगों को पैसे उसके देने पडेंगे । तो वे दूसरे तरीके से ग्राहक के पास से यह रकम ले लेंगे । तो यह इस तरह का विषचक्र है । Vicious circle कि ग्राहक को जो ज्यादा पैसे देने पड़ते हैं, वह अंत में तो आखरी जुमला गरीब पर ही आता है । उन लोगों को ही लूट लेते हैं । यह तेल कितना महँगा है । अभी बीच में तो ८॥ (साढ़े आठ) रुपये किलो हो गया था । हमारे यहाँ के गाँवो में से घी तो बिलकुल गया । बिलकुल । क्योंकि डेरियाँ हो गई, इससे सब उसमें चला जाता है । घी, तेल, यह दूध कि बच्चों को खाने के लिए । नगद रकम देते हैं । अच्छी रकम । दूध का अच्छा दाम डेरीवाले देते हैं और पूरा दूध ले जाते हैं । दोपहर को आप दूध लेने आ जाओगे तो गाँवों में नहीं मिलेगा । अरे ! हमारे आश्रम में दूध की आवश्यकता हो तो नड़ियाद में दूध मिलना मुश्किल हो जाता है । तब घी तो गया । बिलकुल । उससे छाछ होती । छाछ में तो हमें पोषण मिले ऐसे तत्त्व हैं । साहब, वह भी गई । घी भी गया । एक तेल खाने जैसा वह

भी गाँवो में मिलता नहीं है । मिले भी तो साढ़े आठ रुपये । किस तरह मजदूर– गाँव के लोग बेचारे खा सकते हैं ? तेल भी गया है आज । इससे सब्जी खाते थे वह चला गया । इससे थोड़ा-थोड़ा लाकर खाते हैं । बड़ी मुश्किल से थोड़ा तेल लाते । यह साढ़े आठ रुपये का किलो । वह उनको रोजी है ।

• साम्यवाद की निशानी •

तब यह गरीबी हटाने की बात तो खाली एक political stunt है । परंतु वे जो-जो करते हैं, वह पूरा व्यवहार उनका साम्यवाद । असल जो साम्यवाद था । रशिया में शुरूआत हुई उसकी । वह रशिया में इस तरह हुआ कि धीरे-धीरे-धीरे । आज हरएक गरीब को वहाँ रहना, फिर उनके बच्चों को मुफ्त शिक्षा, हरएक को मुफ्त चिकित्सा, हरएक को खाने लायक रोजगार मिलता है यह सही है । हमारे देश में ऐसा नहीं हुआ है । चीन में करीब इस तरह आ गये हैं । केवल वहाँ आपको तकलीफ इतनी है कि सब अनिवार्य । काम बराबर करना ही चाहिए । कि काम न करे तो मारते । पहले तो चीन में भी मारते । खेत में अनिवार्य रूप से प्रत्येक को इतना-इतना काम करना ही चाहिए । अनिवार्य । उतनी मजदूरी न हो तो उसे परेशान किया जाता । कोड़ा लगाते । मार पड़ता । आज अब वह कम हुआ है । फिर भी साम्यवाद में यह एक स्वतंत्रता नहीं रहती है । तो हम वह चाहते नहीं है । आखिर हमारी संस्कृति व्यक्ति की स्वतंत्रता पर निर्भर है ।

परंतु इस समय तो मुझे लगता है कि थोड़े समय के लिए भी हमारे देश में साम्यवाद आएगा। फिर टिकेगा नहीं। परंतु उसकी जरूरत होगी। उसमें से यह सब अराजकता होगी उसमें से फिर से फिर हमारा उदय-वर्तमान होगा। किन्तु यह समय ऐसा आता है कि have और have not जिसके पास है, उसके पास से खत्म करना ऐसा यह समय है। तब ऐसे समय में हम हैं। ऐसे समय में– जमाने में हम जी रहे हैं। हमें व्यापार-धंधा करना है। हमें खाना है। पीना है। तब इसमें सुख-शांति में रहने के लिए हम जितने आपस में एक होंगे तो फायदा है। मैंने तो आप सब को पत्र भी लिखा था। उसके पीछे का भाव यह है। होना या ना होना आप जानो। आपका स्वार्थ जाने। आपका रोट जाने। आपको ऐशो-आराम करना हो, मोटरों में घूमना हो तो यह आपके लिए बहुत आवश्यक है। करोगे तो अच्छी बात है। नहीं करो तो हरि-हरि।

• बहनें गहनें का ठाट-बाट न करें •

और गुरूपूर्णिमा की एक दूसरी बात कर दूँ। इन बहनों को मेरी प्रार्थना है कि आप गाँव में जाओ, शहर में जाओ तो गले में सोने की कंठी– हार पहनकर मत जाओ तो आपके लिए अच्छा हैं। अखबार में प्रतिदिन देखता हूँ और मुझे जितनी बहनें मिलती हैं, उन सब को कहता हूँ। आपको ही कहता हूँ ऐसा नहीं है। मेरे यह जयश्रीबहन को तो अनेक बार कहता हूँ। और उन्हों ने मुझे कहा भी है, ''**मोटा,** अब मैं बाहर जाऊँगी,

तब सोने की कंठी नहीं पहनूंगी ।'' आप बहनों को मेरी प्रार्थना है कि आप बाहर जाओ, तब गले में सोने का कुछ न रखोगे तो वह आपके लिए अच्छी बात है । फिर आप जानो । यह मेरी प्रार्थना आपके समक्ष बिनती के रूप में रख दी है । शादी का प्रसंग हो, तब आप घर में पहनो । परंतु आपके पास पैसे हैं, यह दिखाने के लिए गहनों से सज-धजकर बाहर निकलने की जरूरत नहीं है । यह सब तो देखादेखी से चला है भाई । उसका कोई अर्थ नहीं है । यह समय ऐसा है कि आपको लूट लेते हैं ।

अभी मैंने अखबार में पढ़ा कि पेडर रोड कितना बड़ा ? ओ हो हो हो ! पेडर रोड में तो बड़े-बड़े धनवान लोग रहते हैं । वहाँ उसके गले में से सब ले गये । अखबार में पढ़ा था मैंने और ऐसे तो कई किस्से अखबार में आते हैं, फिर भी हम सावधान नहीं होते हैं । समय तो हमें सावधान करता है । फिर भी ना समझो तो मुझे कोई विरोध नहीं है भाई । आप पहनकर जाएँगे । उसमें मुझे विरोध नहीं है । परंतु मेरा धर्म ऐसा है कि मुझे आपको सावधान करना चाहिए ।

और अब भाद्रमास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को अहमदाबाद में मेरा उत्सव आयोजित होनेवाला है । तब भी मैं तो बहनों को आज तक मैंने कहा नहीं वह कहूँगा । मेरे साथ जिन बहनों का निजी संबंध रहा है, उनको बात की है । उसमें से किसी ने हाँ कहा और किसी ने कहा, ''**मोटा,** आपको समझ नहीं है । क्या हम अब गले को सूना रखकर घूमे ?

सूना गला लेकर ? उसमें आपका क्या जाता है ?'' मैंने कहा, ''मेरा कुछ नहीं जाता है, माफ करना, माँ अब तुम्हें फिर से नहीं कहूँगा।'' ऐसे भी मुझे मिलते हैं। और फिर उसे कहता भी नहीं हूँ। मैं तो उनके भले के लिए कहता हूँ, किन्तु खराब समय आता है और लूट जाते हैं।

चंदुलाल भावसार के साथ हमारा बहुत घरोबा। शारदा को मेरे पर बहुत भाव। नंदुभाई उसे जानते हैं। मेरे लिए मठियाँ, सुखड़ी*, चिवड़ा, बड़े बनाकर देतीं। कई बार सब भेजती रहती। एक बार ट्रेन में से, चलती ट्रेन में से उसके गले में से सोने का बड़ा हार खींचकर ले गए। शिकायत की सब। परंतु कुछ हुआ नहीं– हार गया। तो ऐसे ट्रेन में से भी गले में से खींच जानेवाले आज बहुत निकले हैं।

• *मोटा* को भेंट मिले हुए गहनों का उपयोग परमार्थ में •

तो समय ऐसा है। समझोगे तो अच्छी बात है। बाकी मेरा कुछ जाता नहीं। मैं तो आप सब के लाभ के लिए कहता हूँ। कि **मोटा** तो व्यर्थ पीछे पड़ गये हैं। परंतु पीछे पड़ा हूँ तो आपके लाभ के लिए। मुझे कुछ नहीं। मैंने तो अनेकों का देखा नहीं यह। मिलता है तो राजी होता हूँ। परमार्थ के लिए है। यह सब। यह नंदुभाई जानते हैं आप सब की अपेक्षा मुझे। मेरा ऐसा उत्सव होता है, तब मुझे गहनें मिलते हैं। एक

* घी, गेहूँ का आटा एवं गुड़ से बनी हुई एक गुजराती वानगी।

बार तो ३२-३३ तोले के मिले थे । विद्यानगर में उत्सव हुआ था तब । और मणिनगर में तो एक-एक अंग के । उन सब ने मुझे भगवान को पहनायें हैं वैसे कान में सोने के कुंडल, सोने का कमरबंद, साहब और यह सब उंगली के, पाँव के, एक-एक अंग के गहनें मुझे मिले थे । यह चुन्नी नहीं मिली किसी को, पर मिली होती तो मैं पहनता साहब, मुझे कोई विरोध नहीं । मुझे उसमें क्या विरोध ? परमार्थ में दे देता । इससे मैं कोई गहनें का ..... हूँ । मुझे पहनाते हैं और देते हैं, इससे कुछ मुझे ....., यह कुछ विशेष बहुत कम है यह तो भाई । आप सब के पैसे जो हैं आपके माप में आपके पास पैसे हैं और मेरा जो निजी संबंध है आप सब के साथ उसके अनुपात में तो बहुत कम है साहब । Let me tell you frankly मुझे खुला कहने दो । **और पैसे लेकर कहाँ मेरे घर में खा जानेवाला हूँ ? अच्छे काम में ही खर्च होनेवाले हैं ।** पूरे गुजरात के लिए खर्च होनेवाला है । पर मुझे जो बाहर से मिलता है, उसकी अपेक्षा मेरे परिवार के अंदर कि ये सुरेशकाका कहते हैं, ''**मोटा,** आप परिवार हो, और ऐसा भाव तो आप नहीं रखते हैं ।'' मैंने कहा, ''लाओ न भाई, लाख । लाख रुपये चाहिए । लाओ तुम्हारे में से । मेरा भी हिस्सा है । दो मुझे ।'' परंतु साहब कोई नहीं देता है । इससे ये गहनें मुझे मिलते हैं, मैं राजी होता हूँ । परंतु आप मुझे ज्यादा देते हो ऐसा तो बिलकुल नहीं है । हैसियत से कम देते हो । मेरा भाव है । यहाँ आपके साथ आज तक रहा हूँ । आपके कण-कण में मेरा

भाव है । अभी मैं प्रार्थना करता हूँ । मेरी इतनी बात सच है । परंतु यह गहने मुझे दे रहे हो, उससे आप इस तरह संतोष मत मानना । आपसे ज्यादा मुझे देनेवाले कई पड़े हैं । हजार हाथवाला मेरी मालिक है ।

• *मोटा* की आगाही : खून के संबंधियों तो भाईचारा विकसित करो–शब में से शब्द-हरि-स्मरण •

परंतु मूल मेरी बात यह कि काल ऐसा है कि Have और Have Not । वह have पास से सब खिसकाने का यह काल और इस सरकार की नीति भी है । ऐसे काल में आप सब–सभी भाई भाईचारा विकसित करोगे तो एकदूसरे की उष्मा आपको मिलेगी, एकदूसरे से शांति मिलेगी । एकदूसरे के आगे आप आपके दिल खाली कर सकोगे । तो यह जो सुख है, वह सुख आप भोगें तो मैं भी राजी हो जाऊँगा कि इस परिवार में इतने सारे वर्ष हुए । मामा मुझे । मामा ने मेरे पर भाव रखा था, वह ऐसे वैसे नहीं । मेरी बहुत परीक्षा की है मामा ने । आप सब को कहने की मुझे आवश्यकता नहीं है । यह मैं समझता हूँ । नंदलाल भी यह हकीकत नहीं जानते हैं । परंतु यह हकीकत सौ प्रतिशत सही है । मामा ने मुझ पर ऐसे ही भाव नहीं रखा था । और कई बातें उन्होंने मुझसे की हैं । मैंने नंदलाल को भी नहीं की है । तथा आपको भी किसी को नहीं की है । वे और मैं दो ही जानते हैं । तब यह साबित कर देता है कि मरते समय साहब उसको भगवान नाम आया । इतना

नहीं, परंतु यह तो सब की कही हुई बात है । मेरे मुख की बात नहीं कहता । जब डॉक्टर ने कहा, ''**उन्नुम ईल्ले**'' (कुछ नहीं है) उसके बाद भी वे बोले हैं और आखरी बार सब को राम-राम किया है । यह हकीकत की बात है साहब । ऐसा होना कोई आसान बात नहीं है । इसे भगवान की शक्ति का प्रत्यक्ष चमत्कार कहो तो चमत्कार है और मामा ने मुझे लिखा था कि **मोटा,** अभी तो मैं शुद्धि में जागृत हूँ, ये सब नाड़ी पर तो मेरा काबू है । तभी भगवान का नाम नहीं लेता हूँ । तब मृत्यु के समय तो मेरी सभी नाडियाँ शिथिल हो जाएगी । उस समय कैसे लिया जाएगा ? तो यह बात आपकी मेरे गले नहीं उतरती है । मैंने कहा, 'मामा, अब देखना समय आएगा तब होगा ।' यह सब बनी हुई हकीकत है । तो आपको इसका महत्त्व आपके किसी के दिल में तो है ही नहीं । 'राम तेरी माया !' परंतु मुझे उससे कोई एतराज नहीं है; लेकिन मेरा तो यह प्रयत्न है कि आप सब भाइयों सब और खून के भाई हो । यह कोई भागीदारी के नहीं हो । दूसरे सब अनेक होंगे । एकदूसरे के साथ तो खून का संबंध । ऐसा खून का संबंध है । आप भाईचारा विकसित करो । यह कठिन काल है । प्रपंच काल कहता हूँ और यह हम । यह सब ऐसा काल आता है कि रेईड (छापे) बहुत पड़ती हैं और अनेक लोग बेचारे परेशान हो जाते हैं ।

हमारे नड़ियाद में बीच में इतनी सारी रेईड (छापे) पड़ी थी । अहमदाबाद में पड़ती हैं । यहाँ नहीं पड़ती हैं तो उसका

कारण है कि अमलदार घूसखोर हैं । हमारा समाज भी ऐसा ही है । अमलदार आखिर तो हमारा समाज ही है न ? इसलिए सब दबा दिया जाता । पता लग जाता है । उसी खाते के आदमी आकर कह जाते । क्योंकि सब ने पैसे खाये हुए होते हैं । और वे अमलदार रिश्वतखोर हैं । जब भी छापे पड़ते हैं तो उसे पैसों से नरम कर दिये जाते हैं, साहब । परंतु यह जमाना छापे मारने का है । उस समय आप सब एकदूसरे के साथ रहें तो अच्छी बात है ।

• वेदकाल का साहित्य सब से पुराना है •

अब एक दूसरी बात कहूँ कि असल वेदकाल में यह गुरुपूर्णिमा क्यों हुई ? कि यह tradition क्यों पड़ा ? कि वेद के काल में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद । ये हमारे चार वेद । उसमें कहीं यह उल्लेख नहीं है । ऋषियों थे सही । और वेद के ..... वे लिखते हैं । यह यानी कि लिखे हुए ऐसा नहीं । वे तो भगवान द्वारा बोले गये हैं । यह बात बराबर मानता नहीं हूँ । परंतु ये जो inspired ऋचाएँ, श्लोकों जो ऋषि-मुनियों ने, जो ऋग्वेद इत्यादि में सब बोल गये हैं । वे ऐसे जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, इच्छा, कामना, तृष्णा, लोलुपता, अनेक प्रकार की छटपटी, रागद्वेष इन सब से मुक्त हो सकें, तब उसकी inspiration उसकी प्रेरणा हमारे में उस समय में जागृत होती है । उस काल में । ऐसी उनको इस बात की अंदर से स्फुरणा हुई है और उस असल के समय में तो कुछ लिखने

की पद्धति तो थी नहीं । तब ये लोग यह बोलते और वे सुनते । वे ऋषि हो, वे बोलते और शिष्य सुनते । इससे श्रुति और स्मृति दो ही है लोगों के । श्रुति अर्थात् सुनना और याद रखना..... स्मृति अर्थात् याद रखना । तो साहब, इन लोगों की यह दशा बहुत खिली हुई थी । सब याद रह जाता । आज ऐसे अमुक लोग हैं । उनको सब याद रह जाय । इतना ही नहीं, परंतु प्रयोग करके श्रीमद् राजचंद्र ने बताया था कि एक सही समय पर एक ही पल में उनके दिमाग में १०८ वस्तुएँ रहती थी । १०८ उसने प्रयोग करके दिखाया था । फिर उसने छोड़ दिया । वह प्रयोग । कि मेरे लिए योग्य नहीं है । फिर आध्यात्मिक विषय में चले गये । किन्तु एक ही पल में यह सब हमारे दिमाग में रहता है । ऐसी शक्ति हमारे में है । तो उस समय में श्रुति और स्मृति । यह सुने उसे याद ही रह जाय, ऐसी स्मृति थी, उस समय में । आज नहीं बनता ।

उस काल में इसलिए होता था कि वे लोग एक में ही उसमें ही ज्यादा से ज्यादा एकाग्र और केन्द्रित थे । इससे उनको रह सकता था । इससे वह शक्ति बहुत खिली हुई थी । इससे ये वेद हैं, वे लोग बोलते और अन्य सब सुनते । इससे इसमें से दो शास्त्र निकले– श्रुति और स्मृति । फिर उसमें से सब । उस काल में जाँचे उस काल का साहित्य और यह साहित्य है हमारी दुनिया में Oldest । किसी देश का इस प्रकार का साहित्य पूरी दुनिया में सब से पहले हमारी पृथ्वी में हमारे यहाँ प्रकट हुआ ।

• हठयोग की उत्पत्ति •

.... हठयोग। हठयोग उसके लिए है। शरीर लम्बे से लम्बे समय तक जीए। तब उसके भी उन लोगों ने... उन लोगों ने हमारे लोगों ने वह प्रयोग किया है। हमें ऐसा लगा कि साला, यह किस तरह से हो ? किन्तु हमें पता नहीं है। हमारा शरीर जो क्षीण हो जाता है, अनेक प्रकार के संघर्षणों से, क्लेश, मुठभेड़, चिंता, फिक्र, उद्वेग, एकदूसरे के साथ झगड़ना, एकदूसरे के साथ मिलाप हमारा ना हो मन से। और ऐसे सब कारणों से, ऐसे संघर्षणों से फिक्र, चिंता, उद्वेग, एकदूसरे के साथ बनता नहीं। ये सब कारणों से शरीर पर बहुत भारी असर होता है। आवेश हो जाय उसका भी बहुत असर। इन सब के कारण शरीर क्षीण होता जाता है। यह हमारे मानने में आए, ना आए, परंतु यह हकीकत है। और इसके कारण हमारा आयुष्य भी कम हो जाता है। आयुष्य कम हो जाता है, तब हमारे लोगों ने देखा कि साला, यह सब कम हो जाता है। तो हमारा शरीर भी आकर्षक रहे, आनंद में रह सके, हलके फूल समान रहे। तो इसमें से यह हठयोग की पद्धति निकली।

हठयोग की पद्धति इसलिए निकली कि हमारे असल के ऋषिमुनियों को लगा कि साला, हमें चेतन को तो अनुभव करना है। हमें भगवान को अनुभव करना है। तब ऐसा लगा कि साला, इस संक्षिप्त अवधि में हमारा शरीर तो इतने समय के बाद चला जाता है, मर जाता है। तो हमारा शरीर जीए। तब

ज्यादा से ज्यादा जीए तो हम यह कर सकेंगे । उसमें से यह विद्या निकली । हठयोग की । लम्बे से लम्बा हमारा शरीर टिक सके । सात-सौ आठ-सौ वर्ष तक टिक सके ऐसे उदाहरण हैं । वह है हठयोग ।

• आयुर्वेद की उत्पत्ति •

उसी तरह आयुर्वेद है । वह भी दवा का । इसीलिए निकला कि हमारे लोग साधना करते थे । भगवान का अनुभव करने के लिए तपश्चर्या भी करते थे । परंतु साला, शरीर को रोग हो जाय । बुखार आए, फोडे हो जाए और फलाना हो जाए । तब वे लोगों ने सोचा साला, हमें ये सब आते हैं । वह मानसिक परेशानी होती है । शरीर से बचना, शरीर से इच्छित कार्य नहीं ले सकते हैं । इसलिए उसे करो न । फिर ये ऋषिमुनियों में सब से पहले हुए ये चरक । उसके पहले यह विद्या थी सही, परंतु उसके दो ऋषिमुनियों चरक और सुश्रुत हुए ।

आज यह सभी को मुझे कहना अब मैं कहता हूँ कि एक पेड़ के गुणधर्म खोजते-खोजते तो आपका कितना सारा समय निकल जाता है । तो ये हमारे चरक और सुश्रुत ने लिखा है ..... कि साहब । यह मुँह की बात नहीं । यह लिखा हुआ है कि चरक और सुश्रुत ने अनेक पेड़, पौधे के सिर्फ पेड़, पौधे ही नहीं बेलों और छोटी से छोटी वनस्पति के गुणधर्म लिखे हैं । एक ही जिंदगी के अंदर वे किस तरह जान सके होंगे ? तो वे अनुभवी थे । वह उनका मिशन था यह । यह मेरे से

नहीं हो सकता वह या तो कोई दूसरे अनुभवी से भी यह नहीं हो सकता वह । यह जिसका मिशन हो, वह कर सकता है ।

और चरक और सुश्रुत ने यह एक मिशन ले लिया कि साधना करने में यह शरीर अच्छा नहीं रहता है, इससे परेशानी होती है । इसलिए यह शरीर का आरोग्य सुंदर से सुंदर रहे तो हम यह अच्छा काम कर सकते हैं । इससे वे लोग उसमें लगे । इससे उन्होंने चेतन जिसने प्राप्त किया है । अनुभव जिसने किया है, उसका एक गुणधर्म तादात्म्य हो जाने का । यह ब्रह्म है । चेतनाशक्ति है । वह भी सब के साथ तद्रूप हो जाय । उसके साथ एकरस हो जाय । फिर अलग भी सही । एकरस हो जाय फिर भी अलग । उसके साथ तादात्म्य हो जाय । जैसा हो वैसा वह हो जाय और फिर भी स्वयं अलग ।

इससे ये ऋषिमुनियों प्रत्येक वनस्पति के साथ एकरूप हो गये और अलग होने से, उनमें एक सही किन्तु फिर अलग, साक्षी थे । इससे उसके गुणधर्म जान लिए और यह सब लिखा । एक जिंदगी के अंदर इतनी सब वनस्पति, पेड़, बेल, फूल, पत्ते प्रत्येक के गुणधर्म लिखना कोई सरल बात नहीं है । आप किसी से भी पूछो.... पूरी जिंदगी लगती है ।

हमारी वनस्पति में जीवन है । उसे भी भाव है । और घायल होती है तो उसे दुःख होता है । आनंद में होती है, तब उसके आंदोलनों कुछ अलग प्रकार के । यह साबित करने के लिए, एक ही वस्तु साबित करने के लिए कितना सारा समय लग गया था और हकीकत में यह घटना हुई है । तब ये

ऋषिमुनियों ने अनुभव से इसे खोज लिया। उसी तरह हठयोग है। शरीर को ज्यादा से ज्यादा टिका सके तो चेतन का अनुभव कर सकते हैं। क्योंकि यह शरीर तो चला जाता है, इसलिए इसमें से यह हठयोग निकला। पहले नहीं था। आरोग्य की विद्या भी उसमें से ही निकली।

• गुरूपूर्णिमा की उत्पत्ति •

इस तरह यह जो है वेदों का ज्ञान जब था, तब यह गुरु की प्रथा नहीं थी। बिलकुल किसी गुरु की प्रथा ही न थी। फिर तब वह भावना predominant थी। जीवन में स्वार्थ, रागद्वेष, काम, क्रोध– ये सब थे नहीं। थे तो सही, किन्तु बिलकुल गौण स्वरूप में। सब से आगे मुख्य रूप से भावना की संस्कृति थी। हमें जीवन में चेतन का अनुभव करना है और चेतन के प्रकार की ही भावना थी। लोगों में। सभी की यही स्थिति थी।

उसके पर से काल का निर्माण हुआ। कि किसी काल में सतयुग का महत्त्व। किसी काल में द्वापर का, किसी काल में त्रेतायुग। किसी काल में कलियुग। तो आज यह प्रपंचकाल है। कलियुग का काल है...

यह काल की योजना तो बाद में निकली। कि असल समय में तो भावना अत्यंत predominant। तो उस समय किसी गुरु की प्रथा नहीं थी। बाद में जैसे-जैसे भावना फीकी होती

गई । वह फीकी होती गई, तब हमारे ऋषिमुनियों को लगा कि यह ठीक नहीं है । यह तो भावना का नाश हो जाएगा और यह कुछ रहेगा नहीं । और भावना नहीं रहेगी तो संस्कृति किस तरह टिकेगी ? संस्कृति टिकाने के लिए भावना । **तो वह भावना यानी क्या ? तो उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, रागद्वेष, आशा, इच्छा, कामना इत्यादि की वृत्ति न हो वह ।**

तो कि साला, यह तो बहुत कठिन है । तो कि उसकी अपेक्षा भाई **हम जीवदशा में कुछ कर सके । ऐसा क्या कर सकें तो भावना हमारी रहे और रागद्वेष कम हो ? सब के साथ तुम्हारे दिल को जोड़ो । सब के साथ तो कि वह न जोड़े तो भी ? तो भी आपको सद्‌भाव रखना है । तो आप सद्‌भाव रखो तो आपके मन में तो शांति होगी । आपके मन में तो संघर्षण कम होगा । तो फलाना ऐसा नहीं करता है और मुझे ही करने का ? तो कि भाई तुझे गरज हो तो तुम करो । अन्यथा तुझे कौन कहता है ?**

तो हमारे लोगों ने यह सोचा कि ऐसा कर । इससे तो फिर यह सब हमें सिखायेगा कौन ? यह सब कौन कहेगा ? इसमें से यह गुरु की प्रथा निकली । और सर्वप्रथम आद्यगुरु कहें तो व्यास भगवान हुए । और आप देखो आज किसी से भी पूछो जहाँ तो गुरुपूर्णिमा को व्यासपूर्णिमा कहा जाता है ।

आज आप यहाँ पूछोगे और हमारे वहाँ भी पूरे हिन्दुस्तान में सब जगह । इस गुरुपूर्णिमा को व्यासपूर्णिमा कहते हैं, इससे सर्वप्रथम व्यास हुए । व्यास कौन कि जिसने यह भागवत् और महाभारत जैसे ये सारे जिसने काव्य लिखे हैं, वह महापुरुष ।

व्यास भगवान पांडव-कौरव के भी गुरु थे । उनको कोई मुश्किल होती तो वे व्यास के पास जाते थे । और व्यास कई वर्षों तक जीए हैं । जेनरेसन्स तक तो चले । कोई कहते साला, यह तो गप । तो हम..... हम सात सौ वर्ष तक जीए यह हमारी कल्पना में भी आये ऐसी बात नहीं हैं । परंतु यह हकीकत है । हठयोग से यह सिद्धि प्राप्त की जा सकती है । यह पक्की बात है । जिस शास्त्र को हम जानते न हो तो उसे हमें हमारी बुद्धि उसे कुछ उसे सच्चा समझ नहीं सकती । तब यह हकीकत सारी ।

इससे यह प्रथा—गुरु की प्रथा—व्यास भगवान से शुरू हुई । और फिर परंपरा चली । तब गुरु को ..... गुरु ..... गुरु तो परंपरागत रूप से । जैसे मंदिर में दर्शन करने जाँय तो जाँय प्रतिदिन हम पूजा करते हों तो वह रिवाज पड़ गया है, उस अनुसार करते हैं । अब वह तो उस बारे में हुआ । मंदिर में दर्शन करने जाना भी निकल गया । वह तो जैसे परंपरागत रूप से mechanically एक रिवाज था, वह अच्छा था कि किसी काल में उस पद्धति से भगवान का विचार तो आपको आएगा भाई ।

• मंदिरों की उत्पत्ति का कारण और वर्तमान में मंदिरो के प्रति सरकारी अभिगम •

मंदिरों का निर्माण भी इसीलिए हुआ कि इस बहाने यह मनुष्य–समाज भगवान का कुछ विचार कर सके । तो आज काल ऐसा है कि मंदिरों भी मिट जाय ऐसा काल है । उसे भी मिटाने के प्रयत्न हुए हैं । जो ब्राह्मण जिस भाव से पूजा करता है, उस भाव से वह हरिजन पूजा कर सकेगा कोई ? उसमें तो है नहीं । उसके खून में नहीं है वह । किन्तु आज काल ऐसा आया है कि पूजारी हो सकेगा । कायदे से साहब । इससे आज सरकार का भी मंदिरों की पूरी संस्कृति लुप्त हो जाय उस प्रकार के प्रयत्न हैं । वैसे तो हुआ ही है कानून । कि हरिजन को ही मंदिरों में पूजारी रखें । परंतु उस पर कितना अमल हुआ है, वह तो भगवान जाने । परंतु कानून की किताबों में आ गया है । और हमारे वहाँ भी ऐसा होने लगा है । हरिजनों की बात नहीं हुई, परंतु जैसे तैसे उचक्के आदमी पूजारी बनने लगे हैं ।

• दिल के भाव से गुरु करो और काल के अनुसार की सिखावन •

इससे यह ऐसा काल आया है कि हमारी संस्कृति लुप्त हो जाय वैसा इस काल का लक्षण है । भाई, वैसे तो गुरु की

बात कर रहा था । वह व्यास भगवान से यह प्रथा शुरू हुई । **इससे परंपरागत रीति से गुरु करने का कोई अर्थ नहीं है । आपका गुरु में भाव होना चाहिए । दिल का भाव होना चाहिए । जिस तरह आपके बाल-बच्चें, घरबार, पत्नी-परिवार, व्यापार-धंधा, प्रतिष्ठा इन सब में आपका दिल रहता है । ऐसा गुरु में कुछ रहता नहीं तो गुरु करने का कोई अर्थ नहीं है ।** जिस तरह आप बाल-बच्चे, पत्नी-परिवार के लिए जो कुछ करते हो और करना पड़ता है । न करो तो पचड़ा आपको ही करना पड़ता है । छुटकारा ही नहीं । और आखिर में तो वह आप सब के संरक्षण के लिए । उदाहरण के लिए आप मेरे लिए गहनें बनवाते हो तो पहले गहनें सभी उपयोग में आते हैं । तो वह बहुत आवश्यक है साहब.... वह नहीं बनवाते हो तो भी जरूर बनवाइये ही । वह टिके ऐसा है । सोने के गहनें न बनवाते हो तो भी बनवाइए । हमारे लालाजी को मैं कहता हूँ । क्योंकि वह हमारे मामा के बड़े बेटे हैं । उसे कहीं जाना पसंद नहीं है । अहमदाबाद जाना हो तो भी बलपूर्वक । आनंद से नहीं ।

तब भी काल ऐसा आ रहा है कि भई बनवाना । वे आपके पास रहेंगे । कुछ नहीं तो यहाँ से भागना पड़ा तो उसे हाथ में रखकर साथ ले जा सकोगे । और कुछ हानि हुई तो उतना बचने का साधन तो होगा । अब यह तो दूसरी बात हुई ।

• अहम् को फीका करने के लिए पैर पड़ने का रिवाज •

और यह जो गुरु है, वह आपके दिल का भाव नहीं होगा तो गुरु काम में नहीं लगेंगे । और मैं इस परिवार में रहा हूँ, वह एक बेटे के समान रहा हूँ । आपके परिवार का मैं बेटा हूँ । मेरा सदैव भाव रहा है । और बेटे के समान मेरा भाव वफादारी से मैं बजाता हूँ । साबित तो नहीं कर सकता । आपका दिल और मन जो कहता हो, वह भले कहे । सिवा मैं कुछ गुरु रूप में सब को मना करता हूँ । मैं तो सब को कहता हूँ मेरे पैर में मत पड़ना आप । पैर में पड़ने का रिवाज इसलिए निकला है कि आपका अहम् फीका पड़े । **किसी के पाँव आप पड़ो तो आपके अहम् को फीका करने की भावना के लिए रिवाज पड़ा था । उस समय यह सभानता रखें कि हमें इस अहम् को फीका करना है ।**

अहम् के कारण अनेक दोष हमारे से होते हैं । अहम् के कारण ही हम एकदूसरे के साथ मिलते नहीं हैं । एकदूसरे के प्रति प्रेम का, खुले दिल का नदी के पूर जैसा उमंग का भाव हमें जागृत नहीं होता एकदूसरे के साथ व्यवहार में, उसका कारण हमारा अहम् है । अहम् ही एकदूसरे से झगड़ा कराता है । तब हमारे ऋषिमुनियों ने देखा कि साला, यह ही खराब कारण है । यह अहम् फीका पड़े तो, साहब, सभी को पैर पड़ने का रिवाज चालू करें । और उस समय प्रत्येक मन में सोचें

कि साला, मेरे अहम् को मुझे फीका करना है। इस तरह अनेक जगह पर वह पैर पड़ें तो यदि कोई रिवाज हो तो याद आये कि साला, यह रिवाज किस लिए है ? कि मेरे अहम् को फीका करने के लिए है । किन्तु आज वह तो चला गया । मैं तो जाहिर में भी कहता हूँ आज । पसंद न पड़े तो कोई पैर मत पड़ो भाई । मेरे साले, व्यर्थ-व्यर्थ । आपके मन में तो कोई भाव है नहीं । पैर पड़ने का भाव नहीं है। उस समय कोई भाव या कोई लहर उठी हुई तो मुझे लगती नहीं है । तो ऐसे पैर पड़ने की क्या जरूरत है भाई ? किन्तु यह तो मैंने आपको उसका रहस्य किस लिए ये सब प्रथाएँ निकली उसका रहस्य आपको समझ में आये इसलिए कहता हूँ ।

• स्वयं की शांति के लिए तो सद्भाव रखो •

उसके बाद उसमें से यह गुरु का भाव निकला । पहले तो यह बिलकुल था नहीं । तो वह निकलते-निकलते फिर वह एक चौकठ़ा हो गया । जैसे व्याहना । बाल-बच्चे हो । फिर उनको पढ़ने भेजते हैं । यह सब व्यवहार करना वह सब mechanical हो गया । लीक । इस लीक में कभी प्राण नहीं प्रकट होते । वह भाव ..... वह भाव जागृत होना बहुत कठिन बात है । और वह भाव हो तो ही सामनेवाले का दिल हमें response देता है । परंतु भाव हो या ना हो, हमारी स्वयं की शांति के लिए, प्रसन्नता के लिए हमें मन से हलकापन लगे,

हमारे मन को किसी भयानक स्वप्न से डर न लगे, इसके लिए हमारा सद्‌भाव । दूसरों के लिए नहीं । स्वयं अपने ही लिए । **आप एकदूसरे के साथ सभी पूर्वग्रह छोड़कर यदि सद्‌भाव रखोगे ओर उसके अनुसार आपका व्यवहार होगा तो आपके मन से आप समझ लें कि आपको उससे कितनी शांति होगी ? दूसरे कोई ऐसा व्यवहार करते हैं या नहीं करते हैं, वह छोड़ देना । वह ख्याल ही छोड़ देना ।**

• सद्‌गुरु के पास खुले हो जाओ– *मोटा* का कार्य समाज का कार्य है •

इसलिए यह सद्‌गुरु इसलिए हुआ कि हमारी प्रथा इसलिए निकली है कि खुले दिल से सब बातें करना । वे कभी किसी से दब नहीं जाएगा । आप उनकी खाने-पीने की सभी आवश्यकतायें पूरी करेंगे तो उससे वे आपके प्रभाव में नहीं आएँगे । कि खाया है, इसलिए आपका अच्छा ही बोलेंगे । मैं उदाहरण मौजूद हूँ । आपका खाता हूँ । आपके अकेले का तो बहुत कम खाता हूँ भाई । आप मुझे देते हो, उससे दूसरी जगह मुझे ज्यादा मिलता है साहब । यह हकीकत की बात है । इसलिए वह तो भूल ही जाना । मुझे दोगे तो गुजरात की समृद्धि के लिए देते हो । यह कुछ चुनीलाल भगत– यह **मोटा** बैठा है, उसे कुछ है नहीं । वह तो गुजरात के लिए काम करने पूरे देश के लिए काम करनेवाला । उसमें पैसे खर्च होते हैं तो देंगे वह बिलकुल यथार्थ सौ प्रतिशत की बात है ।

• धन का सदुपयोग करो •

इससे देते हो वह आपका कर्तव्य है । देना ही चाहिए । उतना आप धन्य । इतना यदि आप किया करो । वह तो आपका रहना था और समय जाते कितने ही धनवान समय गुजरते गरीब हो गये, उसके कई उदाहरण मिलेंगे । **इसलिए यह जो आपको मिला है, उसका सदुपयोग करो । आपके धन का, वैभव, विलास । मैं तो बहुत लोगों को कहता हूँ कि केवल स्वार्थ में पड़े रहोगे तो नहीं चलेगा इस काल में । यह धन आपके अकेले बाप का नहीं है । सब जगह सरेआम मेरे प्रवचन में धनवान लोगों को भी कहता हूँ । इसलिए आपको अभी धन मिला है । तो उसका सदुपयोग करो । इच्छानुसार खर्च करने के लिए धन नहीं है ।** उसका अर्थ यह नहीं कि आप कंजूसी करें, या धन खर्च ही नहीं करना । धन खर्च करें । परमार्थ में खर्च करें । परमार्थ पहले करो । परंतु वह नहीं होगा यह भी मैं जानता हूँ ।

• सच्ची भावना त्याग करवाती है •

परंतु आज प्रथा इससे आज प्रथा की बात करता हूँ, इससे कहता हूँ । तब गुरु करना वह mechanically लीक की तरह करना उसमें यदि भाव न हो तो कोई अर्थ नहीं है । और भाव होगा तो वह दिखे बिना कुछ रहता ही नहीं । भाव में त्याग

रहा हुआ है । भाव जागृत हो तो उसके लिए कुछ न कुछ हम करते रहें तो भाव । वर्ना नहीं, साहब । खाली गलत बोलते हो आप । दंभ है !

मैं खार (मुंबई का सबअर्ब) में एक जगह गया था । यह हरि हाजिर था साहब । इसके लिए मैं हरि को इसलिए मैं हरि का नाम देता हूँ । हरि हाजिर था । उस कोलेज में प्रसिद्ध याज्ञिक साहब प्रिन्सीपाल । कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे । उसने मेरे साहित्य के लिए बहुत प्रशंसा की । मैंने कहा, ''साहब, मुझे यह प्रशंसा नहीं चाहिए । इस प्रशंसा के साथ चेक दोगे तो आप बोलते हो वह सच । बाकी गप ।'' यह हरि बैठा था और मैंने कहा । तो वह व्यक्ति समझ गया साहब । उसने पैसे दिये हैं । तो इसके लिए जितने पैसे मैंने लिखे हैं ..... का जो लेख मैंने किया है और मुझे मिलता है, वह आपको अवश्य दूँगा । वे पैसे दे दूँगा । हरि के सामने ।

• *मोटा* को कुटुंबी मानते हो तो भक्ति तो दिखाओ •

मैं तो बहुत स्पष्ट कहनेवाला आदमी । पर मैं तो नहीं कहता । यह भाई हमारे कहते हैं कि **मोटा** कुटुंब मानो । तब .... आपके कुटुंब का मानते हो .... यहाँ मेरे सामने मत देखो साहब । कैसे कहूँ ? आप आपकी सुनने और स्वीकार करने की पात्रता को देखिए । **मैं तो कहूँ आप सब भाई एक हो जाओ तो कहाँ होते हो ?** मैंने तो पत्र भी नहीं लिखा है ।

तो किस तरह तैयारी ? कुटुंब कैसे मानूँ मैं ? आप भक्ति तो दिखाओ । कुटुंब के कहे अनुसार । अब दूसरे को कहता हूँ साहब ये धनवान लोगों के साथ कहने में तो बहुत स्पष्ट बात करता हूँ । यह नंदुभाई साक्षी है । आपसे कितना बड़ा धनवान । एक ही धनवान मुझे तो मिला है । परंतु मैंने उसे भी स्पष्ट कह दिया साहब । मैं तो किसी के रोब में नहीं आता । उसके बाप का थोड़ा खाता हूँ ? परंतु यहाँ तो मैं संकोच के साथ व्यवहार करता हूँ । बहुत संकोच के साथ व्यवहार करता हूँ । आपको ख्याल नहीं आएगा । परंतु मुझे ख्याल है । यह तो भाई ने मुझे सुबह कही बात । कि कुटुंब मानते हो तो सब जगह कहते हो तो खुला क्या ? आज खुला कहूँ । जरूर करना मुझे प्रसन्नता होगी । आप सब के पैर पड़ूँगा । करना भाई । आपके लाभ की बात है ।

• मृत्यु तक भी गुरुआज्ञा का पालन •

किन्तु यह तो प्रथा की बात करता था । कि गुरु की यह परंपरा हुई । परन्तु गुरु खाली-खाली करने का कुछ अर्थ नहीं है । गुरु हमारे भाव के लिए जो कुछ करना है साहब । मैंने तो गुरु की ऐसी-ऐसी कठिन आज्ञा का पालन किया है, जिसमें मर भी सकता था । समुद्र में चले जाने का हुक्म किया था । आपकी ताकत है किसी की आपमें से ? साहब, हेमंतभाई साथ में थे । ऐसा वैसा नहीं, मेरे गुरुमहाराज ने कहा

था कि कोई साक्षी रखना । तब गुरु करना । मैं तो कोई गुरु कहता नहीं सब को कि मुझे गुरु करो । आपके कुटुंब का बेटा हूँ और साबित हो गया है साहब । कि गुजरात में एक **मोटा** पैदा हुआ है, जो समाज के परमार्थ का काम करता है । अभी किसी अखबार में लेख आया था । छपा था कोई अखबार में । भाई ने कल ही मुझे पढ़ाया । **आप माने या न माने तो भी मेरी प्रार्थना कुटुंब के साथ, आपके इस व्यापार में भी है । परंतु काल ऐसा आता है कि मेरी प्रार्थना भी सार्थक नहीं होगी । इसलिए आप चेत जाओ तो अच्छा है । लेकिन वह बात दूसरी है ।**

• चेतनानिष्ठ के लक्षण उदाहरण सहित •

यह प्रथा आई गुरु की । तो ज्यों का त्यों खाली-खाली mechanically केवल लीक की तरह करने का कोई अर्थ नहीं । वह तो वफादार आदमी है । गुरु हमेशा वफादार । उसकी वफादारी की तुलना में कोई संसारी व्यक्ति आ सके ऐसी ताकत नहीं है । मैंने इस सद्‌गुरु पर लिखा है । उसमें भी लिखा है कि वह वफादार है । चेतन में निष्ठा पायी है ऐसा उसका या आपको ऐसा अनुभव हुआ है ? आप ऐसे हो उसका सबूत क्या ? अबे, अभी मैं जिंदा हूँ । सबूत क्या ..... मेरे इतने रोग हैं । ये रोग तो साबित हो सकते हैं । वैसे तो मैंने एक जाहिर प्रवचन में कहा है फिर कि कोई पाँच हजार रुपये

मुझे दे और क्लिनीक में मुझे बिठाकर मेरे शरीर को जाँचे । कि ग्लुकोमा है, आँखो में मुँहासे हैं । गले में ..... रोज जलता है । सोते समय और दोपहर को सोते समय जलता है । विचार करके देखो गले का दर्द । फिर यह दमा तो दिखाई देता है । फिर यह Fluctuating B. P., Fluctuating pulse किन्तु एम. डी. डॉक्टर साहब जाँचे । **मोटा,** आपकी pulse सौ हैं । आज जाँच की तभी । आज । मेरी बात नहीं है यह । यहाँ बैठे हैं पूछीए कि fluctuating pulse भी है और fluctuating B. P., तीन जगह spondilitis कमर में, पीठ पर और गले में, पाइल्स, प्रोस्टेट ग्लेन्ड, साहब रात को इतनी परेशानी होती है और दिन में भी होती है, परंतु किसे कहना ? मैं स्वयं किसी से कहता नहीं हूँ । ओपरेशन भी हो सके । ऐसे अनेक दर्द । कितने गिनाऊँ ? पेट में भी है । फिर यह acidity ज्यादा एक साल हो गया मेरा बेटा । यह मेरे आश्रम में से मुंबई से निकला तब से चीपकी, किन्तु जाहिर हुई मेरी बेटी ..... में जाहिर हुई । होगा भी उसे भी रहने दो । परंतु इतने सब रोगों के बीच में भी घूमता हूँ, फिरता हूँ, बातें करता हूँ । कल दो सौ बीस मील की मुसाफरी की । मुझे वेदना होती होगी, वह मेरा मन जानता है । परंतु बालाकाका के वहाँ भी सब आनंद से बात की । स्वस्थता से साहब । और यहाँ आया तो सब को प्रेम से बुलाया किया, आनंद से बातें हुई । कोई ताकत नहीं कि कोई ..... कि शरीर के इतने रोगों के साथ ।

परंतु यह आप साबित कर सकते हैं। आज तो और ऐसे दर्दों के बीच उसने सर्जन किया है।

यह सब इस कुंभकोणम् आश्रम में आज मैं खाली नहीं रहता हूँ। 'जिज्ञासा', 'भाव', 'निमित्त', 'रागद्वेष', 'कृपा', 'कर्म-उपासना' ऐसे लिखे हैं, और यह सूरत के भट्ट के दवाखाना में बारह दिन आर. के. देसाई ने मुझे रखा। वहाँ मैंने यह 'स्वार्थ' पर लिख डाला। पूरा शास्त्र। जिसको पढ़ना हो तो पढ़े। देखना आप। मेरा लेख बहुत सरल होता है। सब को समझ में आ जाता है। ऐसे दर्दों में मेरा भाई है, वह कवि भारी, मेरे से भी बड़ा साहब। उसे मैंने कहा निवेदन के साथ। अबे ''मूलजीकाका, तू कुछ काव्य लिख। पर तुझे अखबारों का इतना रस। तो मंगाओ। क्या पढ़ते हो ?'' मेरा.... पूरा मन ही मेरी यह वेदना में है। तब यह कुछ आसान नहीं है भाई। इतने सारे रोगों के साथ इस तरह घूमना, फिरना सब के साथ आनंद से बातें करना और ऐसा सर्जन होना यह सब प्रत्यक्ष खुला देख सकते हो। यह कुछ मानने में न आये तो भी। और फिर आपका शरीर। मेरा भगवान मेरे द्वारा और साल भर में बारह-बारह चौदह-चौदह लाख के काम होते हैं। हमारा। मिलता है। किन्तु साहब संकल्प मेरा भगवान पूरा करता है। किन्तु आपको कहाँ देखना है ? प्रकृति जीवित रखती है चेतना को साहब तो हम मानें, परंतु आपको यह मानना हो तो मानो। यह प्रत्यक्ष है। परंतु आपके ख्याल में

नहीं आएगा । आपके गले नहीं उतरेगा । और आपको तो मानना है नहीं । फिर मैं क्या करुँ ? परंतु मेरे हाथ में । मैं इससे निराश नहीं होता हूँ ।

क्योंकि ऐसे लोगों का जगत ने हमेशा इन्कार किया है । ईसु भगवान का भी इन्कार किया है । हरएक जो ऐसे महान समर्थ हुए हैं, उसका जगत ने इन्कार किया है । इनका इन्कार किया है, उसका उनको दुःख नहीं है । इससे निराश भी नहीं होता । उसका भाव हमेशा टिका रहता है । इसमें उसका स्खलित– उसका स्खलन कभी नहीं होता है । ऐसे माने या न माने उसके साथ उसे निसबत नहीं है । हरिः ॐ..... तत् सत् ।

• • •

हरि:ॐ आश्रम में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों का लिस्ट

क्रम	पुस्तक	प्र.आ.
१.	पूज्य श्रीमोटा एक संत	१९९७
२.	कैंसर का प्रतिकार	२००८
३.	सुख का मार्ग	२००८
४.	दुर्लभ मानवदेह	२००९
५.	प्रसादी	२००९
६.	नामस्मरण	२०१०
७.	हरि:ॐ आश्रम (श्रीभगवान के अनुभव का स्थान)	२०१०
८.	श्रीमोटा के साथ वार्तालाप	२०१२
९.	विवाह हो मंगलम्	२०१२
१०.	बालकों के **मोटा**	२०१२
११.	विद्यार्थी **मोटा** का पुरुषार्थ	२०१२
१२.	मौनमंदिर का मर्म	२०१३
१३.	मौनमंदिर का हरिद्वार	२०१३
१४.	मौनएकांत की पगडंडी पर	२०१३
१५.	मौनमंदिर में प्रभु	२०१४

●

English books available at Hariom Ashram Surat.
January - 2020

No.	Book	F. E.
1.	At Thy Lotus Feet	1948
2.	To The Mind	1950
3.	Life's Struggle	1955
4.	The Fragrance Of A Saint	1982
5.	Vision of Life - Eternal	1990
6.	Bhava	1991
7.	Nimitta	2005
8.	Self-Interest	2005
9.	Inquisitiveness	2006
10.	Shri Mota	2007
11.	Rites and Rituals	2007
12.	Naamsmaran	2008
13.	Mota for Children	2008
14.	Against Cancer	2008
15.	Faith	2010
16.	Shri Sadguru	2010
17.	Human To Divine	2010
18.	Prasadi	2011
19.	Grace	2012
20.	I Bow At Thy Feet	2013
21.	Attachment And Aversion	2015
22.	The Undending Odyssey (My Experience of Sadguru Sri Mota's Grace)	2019

●

॥ હરિ:ૐ ॥

श्रीसद्‌गुरु का ऋण चुकाने हेतु मौनमंदिर

भगवान की कृपा से तो ही उनका ऋण चुकाया जा सकेगा । ऐसा ऋण चुकाने हेतु ये मौन-मंदिरें आश्रम में मैंने बनाये हैं । हमारे वहाँ कोई भाषण, कोई प्रवचन, ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा । चाहे दूसरी जगह शास्त्र-बास्त्र पढ़े जाते हो, परंतु स्वयं को मथने के सिवा, स्वयं द्वारा संग्राम किये बिना, यह ज्ञान कभी भी प्राप्त नहीं हो सकेगा । यह मेरे मन में एक निर्विवाद बनी हुई हकीकत हैं । स्वयं को ही मथना चाहिए । अनेक महात्माओं के पास गया हूँ । सत्संग के हेतु से, किन्तु स्वयं को मथने के लिए मुझे बहुत कम महात्माओं ने महत्त्व दिया है । आशीर्वाद और कृपा पर तो बहुत भार । आज भी हमारा समाज आशीर्वाद और कृपा माँग-माँग कर पंगु हो गया है ।

– श्रीमोटा

'श्रीमोटावाणी-१', प्र. आ., पृ. ७

किंमत : रु. १०/-